

# केन्द्र भारती

जून २०२०

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी की पारिवारिक - सांस्कृतिक पत्रिका

गंगा

अ

व

त

र

ण

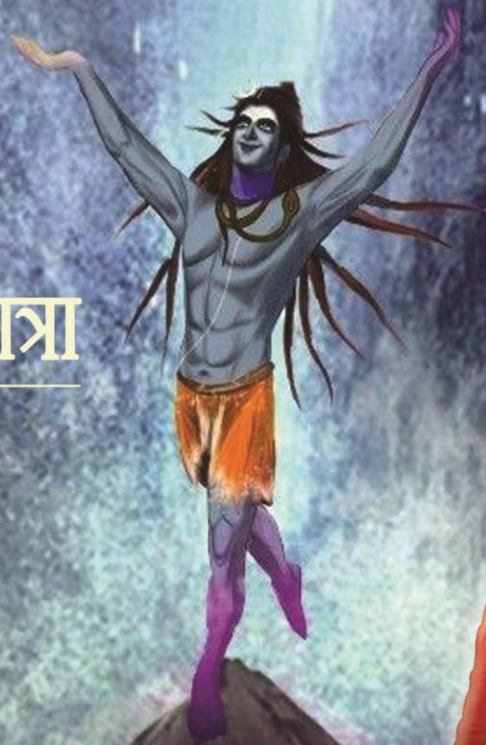
योग दिवस

जगन्नाथ रथ यात्रा

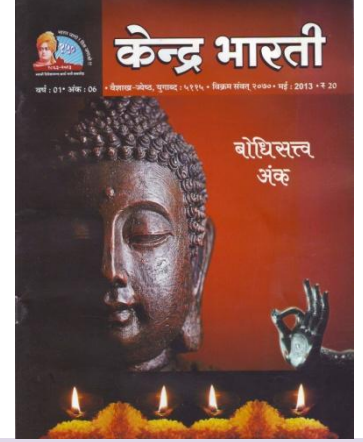
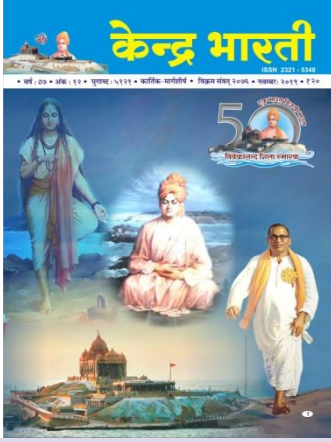
संत कबीर

परिवार

कोरोना







## केन्द्र भारती के सदस्य बनें और बनायें !

जन्मदिवस और अन्य उत्सवों में केन्द्र भारती की सदस्यता भेंट करें !  
सार्वजनिक वाचनालय संस्थाओं और विद्यालय महाविद्यालयों में सदस्यता भेंट करें !  
सद्दिचारों-संस्कृति-स्वधर्म का प्रचार प्रसार करें !

### सदस्यता शुल्क

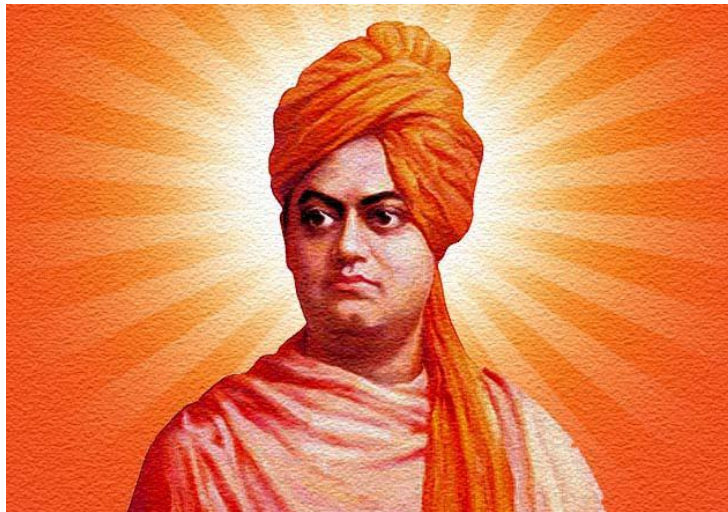
यह अंक - रु २०, वार्षिक - रु १५०, त्रैवार्षिक - रु ४००,  
पांच वर्ष - रु ६५०, दस वर्ष - रु १२००  
संवर्धक - रु २०००, विशेष संवर्धक - रु ५०००

Bank Details : A/c name: "Kendra Bharati"  
A/c No: 952940190, IFSC : IDIB000J009  
Indian Bank, Chopasani Road, Jodhpur  
Email: [kendrabharati@vkendra.org](mailto:kendrabharati@vkendra.org)  
Ph: 0291-2612666

**अब** विदेशों में भी केन्द्र भारती !

**केन्द्र भारती** का डिजिटल अंक **विश्व के प्रत्येक देश** में अब सहजता से उपलब्ध होगा।  
वह भी भारतीय अंक के मूल्य पर ही।

## विवेक वाणी:



## हमारा व्यक्तित्व 'परमात्मा' है

यदि हम ईश्वर से अभिन्न हैं और सदैव एक हैं, तो क्या हमारा कोई व्यक्तित्व नहीं है? हाँ है; वह ईश्वर है। हमारा व्यक्तित्व परमात्मा है। तुम्हारा यह इस समय का व्यक्तित्व वास्तविक व्यक्तित्व नहीं है। तुम सच्चे व्यक्तित्व की ओर अग्रसर हो रहे हो। व्यक्तित्व का अर्थ है अविभाज्यता। जिस दशा में हम हैं, उस दशा को तुम व्यक्तित्व (अविभाज्यता) कैसे कह सकते हो? एक घंटे भर तुम एक ढंग से सोचते हो, दूसरे घंटे में दूसरे ढंग से और दो घंटे पश्चात् अन्य ढंग से। व्यक्तित्व तो वह है, जो बदलता नहीं है। यदि वर्तमान दशा शाश्वत काल तक बनी रहे, तो वह बड़ी भयावह स्थिति होगी। तब तो चोर सदैव चोर ही बना रहेगा और नीच नीच ही। यदि शिशु मरेगा, तो वह शिशु ही बना रहेगा। वास्तविक व्यक्तित्व तो वह है, जो कभी परिवर्तित नहीं होता है और न कभी परिवर्तित होगा ही और वह हमारे अन्तर में निवास करने वाला ईश्वर है।

**- स्वामी विवेकानन्द**

(स्रोत - अद्वितीय भारत)

# केन्द्र भारती

भारत के सभी राज्यों में पढ़ी जाने वाली पारिवारिक- सांस्कृतिक मासिक पत्रिका

ISSN 2321 – 5348 प्रारंभ वर्ष – 1979, वर्ष – 08, जून 2020, अंक – 7,

**संस्थापक - मा एकनाथ रानडे**

**प्रधान संपादक - कुमारी रेखा दवे**, संपादक - डॉ बट्टीप्रसाद पंचोली, सह संपादक - श्री लखेश्वर चन्द्रवंशी

विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन समिति - प्रमुख - श्री अशोक माथुर  
सदस्य - श्री उमेश कुमार चौरसिया प्रो रामगोपाल डॉ शैलेन्द्र स्वामी श्री मुरलीधर वैष्णव श्रीमती बसन्ती पंवार  
प्रो डॉ कमलेश माथुर श्री नरेन्द्र शर्मा डॉ कैलाश कौशल

कार्यालय प्रमुख - श्री महेश बोहरा, रुपांकन तथा विन्यास - श्री सुरेन्द्रसिंह इन्दा

## Contents

विवेक वाणी:	2
चमकते तारे और सुस्मित सुमन	- निवेदिता भिड़े 5
गुरु अर्जुन देव	- रजन फगनु सुत 7
भगवान जगन्नाथ मंदिर और भव्य रथयात्रा	- तलित शर्मा 9
कोरोना संकट से उभरती विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका	- अवधेश कुमार 13
कोरोना: जैविक युद्ध और अन्य निहितार्थ	- कर्नल प्रदीप जैदका 15
योग का अनुष्ठान	- दीपक खैर 18
जीवन का सही परिप्रेक्ष्य में देखने की दृष्टि	- विश्वास तपालकर 21
जोशिया जॉन गुडविन	22
गांधी दर्शन में टिकाऊ विकास के मंत्र	- लखेश्वर चंद्रवंशी 'लखेश' 23
'परिवार' मनुष्य की प्रथम पाठशाला	- श्रीमती संध्या शर्मा 28
कल्पना और झूठ पर आधारित आयोग की रिपोर्ट	- लोकेन्द्र सिंह 30
संत कबीर	- बसन्ती पंवार 32
गांधीजी की स्वदेशी नीति वर्तमान में और भी प्रासंगिक	- श्रीमती रेखा पाण्डेय 35
जीवन: गीता हर युग की कहानी	- नीरा भसीन 36
सीमा पर चीन के व्यवहार के पीछे की पृष्ठभूमि	- डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री 37
योगासन: शलभासन	39

**विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग प्रकल्प संघटक - श्री दीपक खैर**

विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग 'योगक्षेम' गीता भवन, जोधपुर – 342 003 राजस्थान

फ़ोन – 0291-2612666 Blog: kb.vkendra.org website: [www.vkendra.org](http://www.vkendra.org)

email: [vkhpv@vkendra.org](mailto:vkhpv@vkendra.org) (कार्यालय कार्य हेतु); [kendrabharati@vkendra.org](mailto:kendrabharati@vkendra.org) (आलेख एवं समाचार हेतु)

लेखकों के विचारों से आवश्यक नहीं कि संपादक सहमत हो। समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्र जोधपुर होगा।

**मुखपृष्ठ संकल्पना** - ज्येष्ठ माह में शुक्ल पक्ष की दशमी को गंगा दशहरा मनाया जाता है, इस वर्ष 1 जून को गंगा दशहरा मनाया जा रहा है। हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, इस दिन गंगा का अवतरण पृथ्वी लोक पर हुआ था। भगवान शिव ने ब्रह्मा जी के कमंडल से निकली गंगा को अपनी जटाओं में रोक लिया और फिर उनको पृथ्वी पर छोड़ा।

## चमकते तारे और सुरिमत सुमन

# मूर्ति बिना ही दर्शन

- निवेदिता भिड़े

हम ऐसा अनेक बार बोलते हैं कि हम जिनके स्वप्न देखें, जिस प्रकार की श्रेष्ठता की इच्छा करें ऐसे आदर्श हमारे सामने नहीं हैं। और इस अभाव के दुःख में जीवन को सार्थक बनानेवाले अनेक प्रेरणादायी एवं सुखद क्षणों को व्यर्थ गवा देते हैं; जीवन के विकास का अवसर खो देते हैं। चमकते सितारों के अभाव के दुःख में अपने निकट विद्यमान सुन्दर हँसते सुमनों की ओर देख ही नहीं पाते। यह हँसते सुमन अपना मन आनंदविभोर कर देते हैं और जीवन सुगन्धित! चमकते तारे बहुत दूर होते हैं और केवल रात में ही दिखते हैं अपितु सुगंध देनेवाले सुमन सदैव अपने आस-पास ही रहते हैं। आइए, शिकायत करना छोड़ दें और अपने आस-पास जो हँसते सुमन हैं, उनको देखें। हर मार्ग पर ऐसे अनेक सुमन हैं। विवेकानन्द केन्द्र के एक जीवनव्रती कार्यकर्ता के रूप में मुझे भी मेरे मार्ग में ऐसे अनेक प्रेरणादायी, हृदय को छूनेवाले सुरिमत सुमन मिले। यह लेख-माला ऐसे ही कुछ सुगन्धित, सुरिमत सुमनों की माला है।

**सम्भवतः** सन् 1991 में, मैं एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा महान व्यक्तित्व प्रोफेसर बिंदु भूषण सजी के कहने पर भुवनेश्वर गयी थी। उनके मार्गदर्शन में मैं पीएचडी करूँ, ऐसी उनकी इच्छा थी। इसलिए मेरा नाम यूनिवर्सिटी में रजिस्टर कराने में वहाँ गई थी। रजिस्ट्रेशन होने के पश्चात् उन्होंने पूछा, “क्या इससे पूर्व भुवनेश्वर आना हुआ था?” मैंने कहा, “नहीं” उन्होंने तुरन्त मेरे लिए टूरिज्म बस में टिकट बुक करवाया। टूर के साथ जो गाइड थे, वे बहुत ही अच्छे थे हर जगह का ऐसा वर्णन करते कि प्रसंग आँखों के सामने खड़ा हो जाए।

जैसे ही हम कोणार्क के पास आए, उन्होंने बताना शुरू किया, “एक समय यहाँ पर एक भव्य-दिव्य मंदिर था। भगवान सूर्य की मूर्ति बिना किसी आधार के साक्षात् सामने दिखती थी जैसा भगवान सूर्य दिव्य रथ में प्रतिष्ठित होकर आकाश मार्ग से संचार कर रहे हों।

“यह कैसे सम्भव हो सकता था?”, किसी ने अविश्वासपूर्ण ढंग से पूछा।

ऊपर और नीचे दोनों जगह शक्तिशाली चुम्बक हुआ करते थे। दोनों तरफ से खिंचाव होने के कारण मूर्ति बीच में बिना किसी आधार के ही स्थिर थी।

“क्या अब वह मूर्ति नहीं है?”, दूसरे किसी प्रवासी ने उत्सुकता से पूछा।

“दुर्भाग्यवश अब वह मूर्ति नहीं है। एक बार जब ब्रिटिशों के जहाज समुद्र में जा रहे थे, इन शक्तिशाली चुम्बकों ने उनको किनारे पर खींच लिया और वे जहाज टूट गए। इसलिए ब्रिटिशों ने चुम्बक तोड़ दिये और मूर्ति लन्दन ले गए।”

“ओह... तो अब यह मंदिर नहीं है!”, किसी और ने कहा।

“हाँ...” गाइड ने अनिच्छा से कहा।

हम सब बस से उतर के मंदिर का सौन्दर्य देखने आस-पास घूमने लगे। सम्पूर्ण मंदिर की रचना ऐसी है जैसे भगवान सूर्यदेव का रथ हो। रथ के चक्रों की नक्काशी सुप्रसिद्ध है। चक्रों की बारीकी से जानकारी देते हुए गाइड ने यह भी बताया कि चक्र ‘समय’ का प्रतीक है।

गर्भगृह की ओर जाते हुए अनेक सीढ़ियाँ थी। किसी थके हुए यात्री ने कहा, “अन्दर तो कुछ है नहीं। ऊपर क्यों चढ़ें?”

और एक यात्री ने उनके ‘हाँ’ में ‘हाँ’ मिलाई, “हाँ, ब्रिटिशों ने लापरवाही से चुम्बक तोड़ दिया। कुछ समय के पश्चात् जब छत के पत्थर नीचे गिरने लगे तब छत को आधार देने हेतु एक दीवार बनायी गई।”

परन्तु मैंने देखा कि दूसरे अनेक यात्री ऊपर चढ़ रहे थे। तो मैंने भी वहाँ जाना तय कर लिया। जैसे मैं चढ़ने लगी, गर्भगृह में बनायी हुई दीवार सीढ़ियों से ही दिखने लगी। तब यह सोचकर मेरा मन अत्यंत व्यथित हो उठा कि अपने अनेक सुन्दर, भव्य-दिव्य मंदिर ध्वस्त हो चुके हैं।

मैं सीढ़ियाँ चढ़ ही रही थी कि मैंने कुछ लोगों को मंदिर में नमस्कार करते देखा। मुझे आश्चर्य हुआ! किस के सामने प्रार्थना की जा रही थी? ऊपर पहुँचने पर मैंने देखा कि उस दीवार के आलावा और कुछ वहाँ पर नहीं था! अनेक भक्त हाथ जोड़कर, आँखें बंद करते हुए प्रार्थना कर रहे थे। कुछ लोग साष्टांग प्रणिपात कर रहे थे।

अचानक मेरी आँखें भर आई और अश्रु बहने लगे। मन में एक प्रश्न गूँज उठा, “गर्भगृह में कुछ भी नहीं है ऐसे कोई कैसे बोल सकता है? जब तक मेरे देशबांधव ईश्वर को देश और काल के परे जाकर

देख सकते हैं, तब तक यहाँ भगवान हैं। ब्रिटिश भले ही मूर्ति उठाकर ले गए होंगे, परन्तु लोगों की श्रद्धा को वे नहीं ले जा सके। भले ही मूर्ति नहीं दिख रही होगी परन्तु ईश्वर का दर्शन हो रहा है। यदि श्रद्धा है तो मूर्ति के बिना भी ईश्वर का अनुभव हो सकता है और यदि श्रद्धा का ही अभाव रहा तो मूर्ति भी एक जड़ पदार्थ बनकर रह जाएगी।”

एक गहरे आंतरिक समाधान से मैं सीढ़ियाँ उतरने लगी तो मुझे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के शब्दों का स्मरण हो उठा। “धर्मो रक्षति रक्षितः।” धर्म की रक्षा करो और धर्म आपकी रक्षा करेगा। परन्तु इसका अर्थ क्या है? धर्म की रक्षा? इसका अर्थ है ‘धर्म’ की रक्षा। जो धर्म का पालन करते हैं उनकी रक्षा करो और फिर धर्म आपकी रक्षा करेगा।

थोड़े समय पूर्व मेरा जो मन दुःख और खेद से भर गया था अब अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता से भर आया जिन्होंने अनेक आक्रमणों और उतार-चढ़ावों के बावजूद धर्म और ईश्वर को छोड़ा नहीं और इसी कारण से मेरा जन्म इस महान धार्मिक परम्परा में हो पाया। एक परम्परा जिसमें हम प्रतीकों के परे भी देख सकते हैं; जहाँ हम “आकार” में अटकते नहीं क्योंकि हम निराकार को जानते हैं। अकस्मात् मैं स्वामी विवेकानन्द जी के, “इस धरातल पर हिन्दू ही ऐसे हैं जो बिल्कुल मूर्ति पूजक नहीं हैं”- इस सन्देह

का अर्थ समझ गई। लोगों की आध्यात्मिक गहराई इतनी है कि भक्त, मूर्ति के अभाव में भी भगवान की चेतना का अनुभव कर लेते हैं।

जिस दिन मैंने यह प्रसंग लिखा, उसके दूसरे ही दिन प्रातःस्मरण में श्रीरामकृष्ण वचनामृत से जो अनुच्छेद पढ़ा उससे ऐसे लगा जैसे श्रीरामकृष्ण उसको मान्यता दे रहे हों!

वचनामृत का अनुच्छेद इस प्रकार था- “जैसे ही ठाकुर पूजागृह में आए उन्होंने व्यासपीठ के सामने नीचे झुककर प्रणाम किया। अपना स्थान ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने मास्टर महाशय और अन्य भक्तों से कहा, “नरेन् ने एक बार पूछा, ‘ब्रह्म समाज के मंदिर में नीचे झुककर क्यों प्रणाम करते हैं?’ (ब्रह्म समाज के मंदिर में मूर्तियाँ नहीं होती।) मंदिर देखते ही मन को भगवान का स्मरण हो उठता है, भगवत चेतना का जागरण होता है। जहाँ भक्तजन गुणगान करते हैं वहाँ भगवान होते हैं। वहीं सारे तीर्थक्षेत्र हैं। पूजा का स्थान देखकर मुझे भगवान की ही याद आती है। एक बार एक भक्त बबूल के पेड़ को देखते ही भावविभोर हो गया। उसको स्मरण हुआ कि राधाकान्त के उद्यान मंदिर के कुल्हाड़ी का डंडा बबूल की लकड़ी से ही बना है। एक शिष्य की अपने गुरु पर इतनी भक्ति थी कि गुरु के पड़ोसी को देख लेने भर से ही भावविभोर हो जाता था। मेघ, नीला वस्त्र या कृष्ण भगवान का चित्र देखने से ही राधा रानी के मन में कृष्ण चेतना जागृत हो जाती थी।”

- लेखिका विवेकानन्द केन्द्र की अखिल भारतीय उपाध्यक्ष हैं।  
मूल लेख-अंग्रेजी, अनुवाद: प्रियम्बदा पांडे,  
जीवनव्रती कार्यकर्ता, विवेकानन्द केन्द्र

**क्रियाएँ एवं प्राणायाम**

- भस्त्रिका
- कपालभाती
- नाडीशुद्धि
- भ्रामरी

**विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी**  
**मध्य प्रान्त**  
**"प्राणायाम सत्र"**  
दिनांक : 5 जून से 14 जून 2020.  
समय : सुबह 6.15 से 7.30.  
जुड़ने के लिए Missed Call करें।  
**8668638142**



**विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी शाखा-रांची**  
द्वारा आयोजित  
**दस दिवसीय योग सत्र**

दिनांक :- 31/05/2020 (रविवार) से 09/06/2020 (मंगलवार)  
समय :- सायं 5:00 से 6:00 तक

योग सत्र गूगल मीट पर लाइव होगा। जिसका ID आपको पंजीयन के बाद भेज दिया जायेगा। पंजीयन केवल बिहार- झारखण्ड के लिए।

8986460740 | [ranchi@vkendra.org](mailto:ranchi@vkendra.org)

<https://qr.go.page.link/dgSb3>  
इस QRCode को स्कैन करें और अपना पंजीयन करें। पंजीयन 31/05/2020 दोपहर तक करा सकते हैं।





## बलिदान दिवस पर विशेष:

# गुरु अर्जुन देव

- रजन फगनु सुत



श्री गुरु अर्जुन देव जी सिख धर्म के पंचम गुरु थे तथा धर्म की रक्षा के खातिर अपना बलिदान दिया। सिख पंथ को महान धर्म का रूप देने में उनका बड़ा योगदान था। महान संतों के अमृत वचनों को संकलित कर उसे “आदि ग्रंथ” का रूप देकर उन्होंने सिखों के साथ ही सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनके इस महान योगदान के लिए गुरु अर्जुन देव का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है।

श्री गुरु अर्जुन देव सिखों के चतुर्थ गुरु श्री गुरु रामदास के सबसे छोटे पुत्र थे। उनका जन्म 15 अप्रैल, 1563 को हुआ। गुरु अर्जुन देव महान तत्ववेत्ता, दार्शनिक एवं साहित्यकार होने के साथ-साथ साहसी व्यक्तित्व के धनी थे तथा सिख इतिहास में उनका अपना एक अलग ही स्थान है। गुरु रामदास ने ‘अमृतसर’ नामक सरोवर के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया। अमृतसर अर्थात् अमृत का सरोवर। इस सरोवर के निर्माण में गुरु अर्जुन देव ने सक्रिय रूप से कार्य किया। अतः इस कार्य को पूर्ण करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। भक्तिभाव में सराबोर रहने वाले गुरु अर्जुन देव ने लिखा है-

“राज न चाहों, मुक्ति न चाहों,

मन प्रीत चरन कमलारे”।

1 सितम्बर, 1581 को श्री गुरु रामदासजी ने अपने इस तृतीय पुत्र अर्जुन देव को सारी संगत के सम्मुख गुरु गद्दी सौंप दी। गुरु गद्दी

पर आसीन होने के पश्चात गुरु अर्जुन देवजी ने सरोवर के बीचोंबीच हरिमंदिर साहिब बनवाया। हरिमंदिर बनाते समय गुरुजी के अनुयायियों ने उन्हें सलाह दी कि हरिमंदिर बहुत ऊँचा और विशाल होना चाहिए, क्योंकि हरिमंदिर जितना ऊँचा होगा उसका मान उतना ही अधिक होगा; किन्तु गुरु अर्जुन देवजी इस बात से सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा कि वृक्ष जितना अधिक फलों से लदा होता है, उसकी डालियाँ उतनी ही झुकी होती हैं। अतः हरिमंदिर साहिब इस क्षेत्र की सबसे नीची इमारत होगी। गुरु अर्जुन देव ने स्वयं मंदिर का नक्शा बनाया। उनके अनुसार हरिमंदिर साहिब में प्रवेश करने के लिए सबको विनम्र बनकर कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरनी पड़ेंगी तथा इसका मुख्य द्वार चारों दिशाओं में खुलेगी जो सबके लिए हर समय खुला रहेगा।

गुरु अर्जुन देव दूरदर्शी थे। उनके महान प्रयत्नों से “श्री गुरुग्रंथ साहिब” जैसा महान धार्मिक ग्रंथ अस्तित्व में आया। रामायण और भगवद्गीता की भांति इस महान ग्रंथ का आविर्भाव अपने समय की ऐतिहासिक घटना घटना थी। इसके लिए गुरु अर्जुन देव को सदैव

स्मरण किया जाएगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिख धर्म के महान गुरुओं की वाणियों को संग्रहित किया। गुरु अर्जुन देव के बाद जिस क्रम से गुरु गद्दी परम्परा के वंशज आगे आते गए, उसी क्रम में उनकी वाणियों और शब्दों को इस महान ग्रंथ में स्थान प्राप्त होता रहा। गुरु अर्जुन देव ने सर्वप्रथम जिस पुस्तक का प्रकाशन कराया था, उस समय उसका नाम “गुरु ग्रंथ साहिब” नहीं था, उस समय उसे “पोथी साहिब या आदि ग्रंथ” के नाम से पुकारा जाता था। तब इस ग्रंथ के लिए कहा गया था- “पोथी परमेश्वर की थाना” इसका सर्वप्रथम प्रकाशन सन 1604 में किया गया। इस ग्रंथ में गुरुनानक देव तथा उनके पूर्ववर्ती और उस समय के प्रमुख सन्त जैसे संत नामदेव, संत कबीर, संत रामानन्द, संत रविदास, संत सूरदास, संत मीराबाई आदि संतों की वाणी व पदों को गुरुग्रंथ साहिब में संग्रहित करके उसका सम्पादन किया गया। इस ग्रंथ को सर्वप्रथम “श्री हरिमंदिर साहिब” में दर्शनार्थ रखा गया था। उस समय “पोथी साहिब” का पहला ग्रंथी बाबा बुड्ढाजी को बनाया गया।

उल्लेखनीय है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब बहुआयामी ज्ञान व शिक्षा का स्रोत है इसलिए इस ग्रंथ की अपनेआप में बहुत महत्ता है। सिखों के लिए तो यह ग्रंथ अत्यधिक श्रद्धा का केन्द्र है ही साथ ही अन्य मतावलम्बियों के लिए भी यह अनुकरणीय है। हिन्दू जैसे अपने मन्दिरों में मूर्तियां रखते हैं वैसे ही सिख अपने गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब को रखते हैं। सिख परिवारों में जन्म, विवाह, मृत्यु तथा अमृत के संस्कार गुरु ग्रंथ साहिब को साक्षात् परमात्मा मानकर विधिवत किए जाते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब की मूल प्रति अभी भी करतारपुर में रखी हुई है। इसमें प्रथम पांच गुरुओं तथा नौवें गुरु तेग बहादुर जी की वाणियों का संग्रह है। बाद में गुरु गोविन्द सिंह ने इसमें गुरु तेग बहादुर के वचनों तथा गीतों का योग भी किया। तब से गुरुग्रंथ साहिब का रूप इसी प्रकार का रहा और इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। ग्रंथ साहिब के अन्त में गुरु अर्जुन देव जी का एक सम्पादकीय वचन है जिसके अनुसार इस थाल में चार पदार्थ हैं- सत्य, सन्तोष, विचार तथा नाम। इस प्रकार गुरु अर्जुन देव जी ने इस ग्रंथ में साधना के उत्तम अनुभवों की चिरन्तनता और जीवन को सार्थकता प्रदान करने की कालजयी शिक्षाओं को संग्रहित किया है।

गुरु अर्जुन देव मूलतः आध्यात्मिक महापुरुष थे। उनके नेतृत्व के चलते उस समय धार्मिक आन्दोलन राजनीतिक रूप में भी परिवर्तित हो गया। गुरु अर्जुन देवजी के कार्यों से मुस्लिम शासन को आपत्ति होने लगी। दिल्ली की गद्दी पर उन दिनों जहांगीर पदासीन था। कुरान शरीफ के मुकाबले में सिख गुरु ने एक पुस्तक की रचना की है, ऐसी खबर सुनकर बादशाह का कुपित हो जाना स्वाभाविक था। यही नहीं बादशाह तक यह शिकायत पहुंचाई गई कि गुरु अर्जुन देव ने धन एकत्रित करने के लिए मसनद नियत किए हैं तथा बादशाह स्वयं अर्जुन देव से मिलने

आया और कहा कि आपने इस्लाम के विरुद्ध इस पुस्तक की रचना क्यों की है? गुरुजी ने कहा कि उन्होंने तो गुरुओं की वाणी और भक्तों के भजनों का संग्रह करके बीड़ बांधी है। बादशाह चाहे तो स्वयं देख ले... ज्यों ही एक पृष्ठ निकाला गया तो उसमें ईश्वर-भक्ति का विषय निकला। बादशाह ने कहा कि इसमें इस्लाम के पैगम्बर की प्रशंसा में भी कुछ गीत शामिल करें। किन्तु अर्जुन देव जानते थे कि इस समय अपनी स्वतंत्रता खो देने का अर्थ बहुत विनाशकारी होगा अतः उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस ग्रंथ में जो कुछ भी लिखा गया है वह आदि गुरु की प्रेरणा से लिखा गया है, मैं किसी और को प्रसन्न करने के लिए अपनी ओर से इसमें कुछ नहीं बढ़ा सकता। गुरु अर्जुन देव के इस निर्भीक उत्तर से बादशाह को बहुत गुरसा आया। जहांगीर ने किसी भी तरह से गुरु अर्जुन देव को सजा देने अथवा उन्हें मुसलमान बनाने का निश्चय कर लिया। आदि ग्रंथ में से कुछ भाग हटा देने और 2 लाख रुपये देने का दण्ड मुस्लिम शासक द्वारा दिया गया। श्री गुरु अर्जुन देव ने यह दंड की रकम देने से मना कर दिया। गुरु अर्जुन देव की सारी सम्पत्ति जब्त करके भी दंड की रकम पूरी न हो सकी। दंड दो या इस्लाम स्वीकार कर लो। ये दो ही पर्याय उनके सामने रखे गए। ये दोनों भी पर्याय गुरु अर्जुन देव ने अस्वीकार कर दिए।

20 मई, 1606 को श्री गुरु अर्जुन देव को जघन्य यंत्रणाएं देकर मारने की योजना बनाई गई, लाहौर के मई माह की भयंकर धूप की गरम रेत में उन्हें खड़ा किया गया। गरम कड़ाह में खड़ा करके उनपर खौलता हुआ गरम पानी डाला गया। इस तरह की भयंकर यातनाओं को सहन करते हुए भी ईश्वर स्मरण करते रहे। उनकी ईप्सव भक्ति और श्रद्धा अंशमान भी कम नहीं हुई। गुरु अर्जुन देव के मुख से “तेरा किया मीठा लागे नाम पदारथ नानक माने” ये शब्द बाहर निकले। बादशाह का अन्तिम आदेश हुआ कि उन्हें गाय की खाल पहनाई जाए...। ज्येष्ठ की शुक्ल चतुर्थी को उन्हें कड़े बंदोबस्त के साथ सैनिकों ने रावी नदी में में स्नान के लिए लाया। वे नदी में स्नान करने के लिए उतरे और फिर वे कभी बाहर नहीं निकले। इस तरह 30 मई, 1606 को श्री गुरु अर्जुन देवजी का स्वर्गवास हो गया।

गुरु अर्जुन देव ने सिख संगत को संबोधित करते हुए कहा था- “संतों! आज के बाद तुम्हें दो नियम बदल देने हैं। पगड़ी बांधो और कमर में हर समय तलवार लटकाओ। गुरु गद्दी के स्थान पर अकाल तख्त की रचना करो। यदि अपने धर्म को बचाना चाहते हो तो तुम्हें जालिम शत्रुओं से युद्ध करने के लिए अपनेआप को संगठित करके तैयार रहना होगा। शान्ति और सब्र से कोई भी धर्म या कौम अब अपनेआप को सुरक्षित नहीं रख सकती। उसके लिए शक्ति जरूरी है।” इस प्रकार श्री गुरु अर्जुन देव ने सिख धर्म को एक नई दिशा दी। आगे के गुरुओं ने इस धर्म में समय के साथ-साथ और भी कई परिवर्तन किए।

श्री गुरु अर्जुन देव जी को शत-शत नमन...



23 जून जगन्नाथ रथयात्रा पर विशेष

# भगवान जगन्नाथ मंदिर और भव्य रथयात्रा

- ललित शर्मा



ओडिशा राज्य के तटवर्ती क्षेत्र में स्थित जगन्नाथ मंदिर हिन्दुओं का प्राचीन एवं प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। हिन्दुओं की धार्मिक आस्था एवं कामना रहती है जीवन में एक बार भगवान जगन्नाथ के दर्शन अवश्य करें क्योंकि इसे चार धामों में से एक माना जाता है। वैष्णव परम्परा का यह मंदिर भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण को समर्पित है। इस मंदिर में तीन मुख्य देवता भगवान जगन्नाथ, उनकी बहन सुभद्रा एवं बड़े भैया बलभद्र की पूजा होती है। यहाँ हर वर्ष भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा निकाली जाती है जो भारत ही नहीं वरन् विश्व प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि जो इस रथयात्रा में शामिल होकर रथ को खींचते हैं उन्हें सौ यज्ञ के बराबर पुण्य लाभ मिलता है। रथयात्रा के दौरान लाखों की संख्या में लोग शामिल होते हैं एवं रथ को खींचने के लिए श्रद्धालुओं का भारी तांता लगता है। जगन्नाथ यात्रा हिन्दू पंचांग के अनुसार आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को निकाली जाती है। जगन्नाथ रथ उत्सव 10 दिन का होता है इस दौरान यहाँ देशभर से लाखों श्रद्धालु पहुँचते हैं।

## जगन्नाथ मंदिर का निर्माण

इस मंदिर का निर्माण कलिंग राजा अनंतवर्मन गंगदेव ने कराया था। मंदिर का जगमोहन एवं विमान भाग इनके शासन काल (1078-1114 ई) में निर्मित हुआ था। फिर सन 1147 में राजा अनंग भीम देव ने इस मंदिर को वर्तमान रूप दिया था। इसका ताम्रपत्रों में उल्लेख बताया जाता है। मंदिर में जगन्नाथ अर्चना सन् 1558 तक होती रही। इस वर्ष काला पहाड़ ने ओडिशा पर हमला किया और मूर्तियाँ तथा मंदिर के भाग ध्वंस किए और पूजा बंद करा दी तथा विग्रहों को चितिका झील में स्थित एक द्वीप में गुप्त रखा गया। बाद में, रामचंद्र देव के सुर्दा में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने पर, मंदिर और इसकी मूर्तियों की पुनर्स्थापना हुई।

## मंदिर का विहंगम दृश्य

कलिंग शैली में निर्मित इस मंदिर को हम देखें तो वर्तमान में भी काला पहाड़ द्वारा किए गए विध्वंस के चिन्ह दिखाई देते हैं। मुख्य

मंदिर के आमलक एवं जगमोहन की छत को उसके द्वारा तोड़ दिया गया प्रतीत होता है। प्रस्तर निर्मित इस मंदिर के विशाल आमलक एवं जगमोहन की छत का पुनर्निर्माण हुआ है। जो प्रस्तर निर्मित न होकर चूना सुर्खी से बना हुआ है अलग ही दिखाई देता है। राजा ने जगन्नाथ मंदिर का भव्य निर्माण कराया था। भित्तियों पर अप्सराएं, वादक, भारसाधक, व्यालों के साथ मिथुन मूर्तियाँ भी स्थापित की गई हैं। इसकी भव्यता देखते ही बनती है।

मंदिर का विस्तार बृहत क्षेत्र में है, जो लगभग चार लाख वर्ग फुट में विस्तारित है और चारदिवारी से घिरा हुआ कलिंग स्थापत्यकला एवं शिल्प का उदाहरण है तथा यह भारत के भव्यतम स्मारक स्थलों में से एक है। मुख्य मंदिर चक्ररेखीय आकार का है, जिसके शिखर पर विष्णु का श्री सुदर्शन चक्र (आठ आरों का चक्र) मंडित है। इसे नीलचक्र भी कहते हैं। यह अष्टधातु से निर्मित है और अति पावन और पवित्र माना जाता है। मंदिर का मुख्य ढांचा एक 214

फुट (65 मी.) ऊंचे पाषाण चबूतरे पर बना है। इसके भीतर आंतरिक गर्भगृह में मुख्य देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं।

### सिंह द्वार पर स्थापित गरुड़ स्तंभ

मंदिर का मुख्य भाग विशाल है। मंदिर की पिरामिडाकार छत और लगे हुए मण्डप, अष्टालिकारूपी मुख्य मंदिर के निकट होते हुए ऊंचे होते गये हैं। यह एक पर्वत को घेरी हुई छोटी पहाड़ियों एवं टीलों के समुह सट्टा दिखाई देता है। मुख्य भवन एक बीस फुट



(6.1 मी.) ऊंची दीवार से घिरा हुआ है तथा दूसरी दीवार मुख्य मंदिर को घेरती है। एक भव्य सोलह किनारों वाला एकाक्षर स्तंभ, मुख्य द्वार के ठीक सामने स्थित है। इसका द्वार दो सिंहों द्वारा रक्षित है। मंदिर के शिखर पर स्थित चक्र, सुदर्शन चक्र का प्रतीक है और लाल ध्वज भगवान जगन्नाथ का प्रतीक माना जाता है।

### विश्व प्रसिद्ध भव्य रथयात्रा

वैसे तो रथयात्रा प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया से आरंभ होती है। जगन्नाथ रथयात्रा में सबसे आगे भगवान बालभद्र का रथ रहता है। बिच में भगवान की बहन सुभद्रा का एवं अंत में भगवान जगन्नाथ का रथ रहता है। यह यात्रा मुख्य मंदिर से शुरू होकर 2 किलोमीटर दूर स्थित गुंडिचा मंदिर पर समाप्त होती है। गुंडिचा माता मंदिर में भारी तैयारी की जाती है एवं मंदिर की सफाई के लिये इंद्रद्युमन सरोवर से जल लाया जाता है, जहां भगवान जगन्नाथ सात दिन तक विश्राम करते हैं और आषाढ़ शुक्ल दशमी के दिन फिर से वापसी यात्रा होती है, जो मुख्य मंदिर पहुंचती है। यह बहुड़ा यात्रा कहलाती है। जगन्नाथ रथयात्रा एक महोत्सव और पर्व के रूप में पूरे देश में मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इस रथयात्रा के मात्र रथ के शिखर दर्शन से ही व्यक्ति जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। स्कन्दपुराण में वर्णन है कि आषाढ़ मास में पुरी तीर्थ में स्नान करने से सभी तीर्थों के दर्शन का पुण्य फल प्राप्त होता है और भक्त को शिवलोक की प्राप्ति होती है।

भगवान जगन्नाथ सात दिन तक विश्राम करते हैं और आषाढ़ शुक्ल दशमी के दिन फिर से वापसी यात्रा होती है, जो मुख्य मंदिर पहुंचती है। यह बहुड़ा यात्रा कहलाती है। जगन्नाथ रथयात्रा एक महोत्सव और पर्व के रूप में पूरे देश में मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इस रथयात्रा के मात्र रथ के शिखर दर्शन से ही व्यक्ति जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। स्कन्दपुराण में वर्णन है कि आषाढ़ मास में पुरी तीर्थ में स्नान करने से सभी तीर्थों के दर्शन का पुण्य फल प्राप्त होता है और भक्त को शिवलोक की प्राप्ति होती है।

रथयात्रा के लिए भगवान जगन्नाथ, बलभद्र व सुभद्रा- तीनों के रथ नारियल की लकड़ी से बनाए जाते हैं। ये लकड़ी वजन में भी अन्य लकड़ियों की तुलना में हल्की होती है और इसे आसानी से खींचा जा सकता है। भगवान जगन्नाथ के रथ का रंग लाल और पीला होता है और यह अन्य रथों से आकार में बड़ा भी होता है। यह रथ यात्रा में बलभद्र और सुभद्रा के रथ के पीछे होता है। भगवान जगन्नाथ के रथ के कई नाम हैं जैसे- गरुड़ध्वज, कपिध्वज, नंदीघोष आदि। इस रथ के घोड़ों का नाम शंख, बलाहक, श्वेत एवं हरिदाश्व हैं, जिनका रंग सफेद होता है। इस रथ के सारथी का नाम दारुक है।

भगवान जगन्नाथ के रथ पर हनुमानजी और नरसिंह भगवान का प्रतीक होता है। इसके अलावा भगवान जगन्नाथ के रथ पर सुदर्शन स्तंभ भी होता है। यह स्तंभ रथ की रक्षा का प्रतीक माना जाता है। इस रथ के रक्षक भगवान विष्णु के वाहन पक्षीराज गरुड़ हैं। रथ की ध्वजा यानि झंडा त्रिलोक्यवाहिनी कहलाता है। रथ को जिस रस्सी से खींचा जाता है, वह शंखचूड़ नाम से जानी जाती है। इसके 16 पहिए होते हैं व ऊंचाई साढ़े 13 मीटर तक होती है। इसमें लगभग 1100 मीटर कपड़ा रथ को ढंकने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

बलरामजी के रथ का नाम तालध्वज है। इनके रथ पर महादेवजी का प्रतीक होता है। रथ के रक्षक वासुदेव और सारथी मताली होते हैं। रथ के ध्वज को उनानी कहते हैं। त्रिबा, घोरा, दीर्घशर्मा व



स्वर्णनावा इसके अश्व हैं। यह 13.2 मीटर ऊंचा 14 पहियों का होता है, जो लाल, हरे रंग के कपड़े व लकड़ी के 763 टुकड़ों से बना होता है। सुभद्रा के रथ का नाम देवदलन है। सुभद्राजी के रथ पर देवी दुर्गा का प्रतीक मढ़ा जाता है। रथ की रक्षक जयदुर्गा व सारथी अर्जुन होते हैं। रथ का ध्वज नंदबिक कहलाता है। रोचिक, मोचिक, जिता व अपराजिता इसके अश्व होते हैं। इसे खींचने वाली रस्सी को स्वर्णचुड़ा कहते हैं। 12.9 मीटर ऊंचे 12 पहिए के इस रथ में लाल, काले कपड़े के साथ लकड़ी के 593 टुकड़ों का इस्तेमाल होता है।

भगवान जगन्नाथ, बलराम व सुभद्रा के रथों पर जो घोड़ों की कृतियां मढ़ी जाती हैं, उसमें भी अंतर होता है। भगवान जगन्नाथ के रथ पर मढ़े घोड़ों का रंग सफेद, सुभद्राजी के रथ पर काँकी रंग का, जबकि बलरामजी के रथ पर मढ़े गए घोड़ों का रंग नीला होता है। रथयात्रा में तीनों रथों के शिखरों के रंग भी अलग-अलग

होते हैं। बलरामजी के रथ का शिखर लाल-पीला, सुभद्राजी के रथ का शिखर लाल और ग्रे रंग का, जबकि भगवान जगन्नाथ के रथ के शिखर का रंग लाल और हरा होता है।

उल्लेखनीय है कि भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा देश में एक पर्व की तरह मनाई जाती है। इसलिए पुरी के अलावा देश के अनेक स्थानों पर यात्रा निकाली जाती है। यात्रा का वर्णन स्कंद पुराण, नागद पुराण, पद्म पुराण, ब्रह्म पुराण आदि में मिलता है। इसलिए यह यात्रा हिन्दू धर्म में बहुत महत्वपूर्ण है।

जय जगन्नाथ...

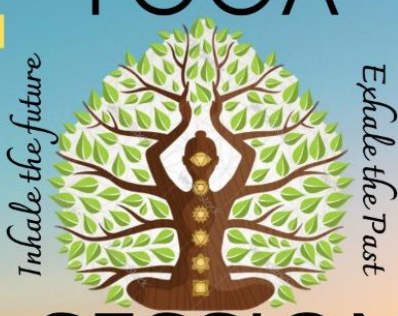
- अभनपुर (जिला रायपुर), छत्तीसगढ़

# Vivekananda Kendra Kanyakumari


## Rajasthan Prant

Cordially invites you to  
roll out your Mats  
for

# YOGA




# SESSION



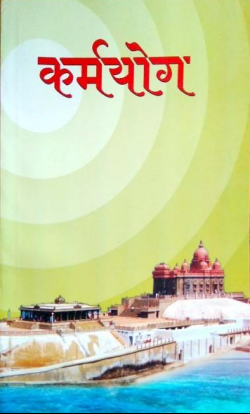
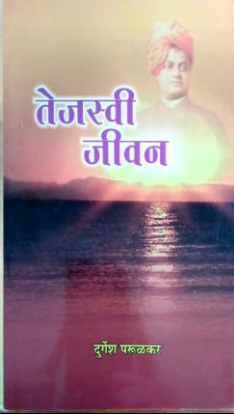

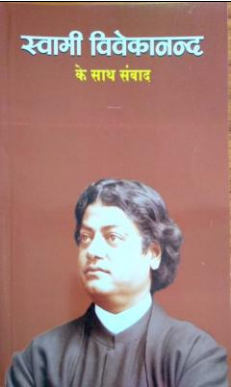

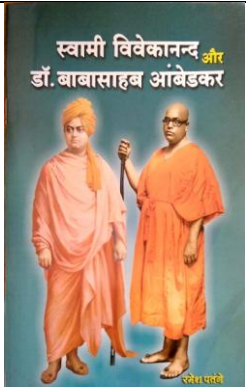
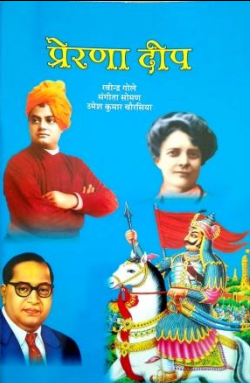
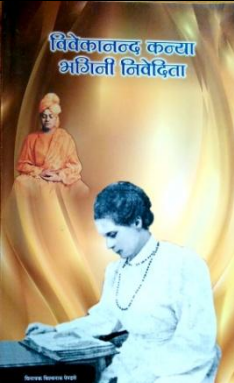
STARTING FROM  
JUNE 10, 2020  
ONWARD  
6:30- 7:30 AM  
Live Streaming  
on YouTube

FOR REGISTRATION  
KINDLY  
Scan this QR Code





# विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन का साहित्य पढ़ें और पढ़ायें !

प्राप्ति स्थान: निकटतम विवेकानन्द केन्द्र शाखा अथवा  
विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग

फोन 0291-2612666, <mailto:vkhpv@vkendra.org>

# कोरोना संकट से उभरती विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका

- अवधेश कुमार



**दुनिया** चीन के शहर पुहान की गतिविधियां सामान्य पटरी पर लौटती देख रही हैं। इसे सरल शब्दों में एक विडम्बना ही कहा जाएगा कि दुनिया में जहां सबसे पहले कोरोना का आविर्भाव हुआ वह देश लॉकडाउन और बंदियों से मुक्त हो गया तो दुनिया के ज्यादातर देशों को अपने यहां लॉकडाउन सहित, आपातकाल, कड़े कानूनों सहित बंदियों को सख्त करना पड़ रहा है। दुनिया संकट में है लेकिन चीन की स्थिति को पूरी तरह सामान्य माना जा रहा है। एक धारणा यह है कि चीन दुनिया के संकट का व्यापारिक-आर्थिक लाभ लेने की योजना पर काम करते हुए उत्पादन पर फोकस कर रहा है। उसकी नजर प्रमुख देशों की उन कंपनियों पर भी है जिनकी वित्तीय हालत खराब हो चुकी है। उसमें निवेश कर वह अपने आर्थिक विस्तार की योजना पर काम करने लगा है। ये संभावनाएं भय पैदा करती हैं कि कहीं कोरोना संकट दुनिया में चीन के सर्वशक्तिमान देश बन जाने में परिणत न हो जाए। निश्चित रूप से यह एक पक्ष है जो भारत सहित दुनिया के ज्यादातर देशों के लिए चिंताजनक है। लेकिन चीन को इसमें सफलता मिलने की संभावना कम है।

इस समय का परिदृश्य देखिए चीन के खिलाफ ज्यादातर देश खुलकर बोल रहे हैं। सारे प्रमुख देश उसे कोरोना कोविड-19 के प्रसार का दोषी घोषित कर चुके हैं। एकमात्र भारत ही है जो इस मामले में संयत रूख अपनाते हुए किसी तरह का आरोप लगाने से बच रहा है। जी-20 के वीडियो कॉन्फ्रेंस से आयोजित सम्मेलन में, जिसमें चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी उपस्थित थे, इस बात की पूरी संभावना थी कि कुछ देश चीन से नाराजगी व्यक्त करें, पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुद्धिमता से ऐसा नहीं होने दिया। उन्होंने अपने भाषण के आरंभ में कहा कि यह समय किसी को दोष देने या वायरस कहां से आया इस पर बात करने का नहीं बल्कि मिलकर इसका मुकाबला करने का है। इसका असर हुआ और सकारात्मक परिणामों के साथ वर्चुअल शिखर बैठक खत्म हुआ। किंतु न बोलने का अर्थ यह नहीं है कि भारत, चीन के अपराध को समझ नहीं रहा। लेकिन नरेन्द्र मोदी सरकार ने इस वैश्विक संकट के दौरान भारत की भूमिका का निर्वहन इस तरह किया है जिसमें चीन या किसी की आलोचना फिट नहीं बैठती।

वास्तव में, इस पूरे संकट के दौरान चीन और भारत की भूमिका में ऐसा मौलिक अंतर दुनिया ने अनुभव किया है जिसका प्रभाव भावी विश्व व्यवस्था पर पड़ना निश्चित है। भारत ने कोविड-19 प्रकोप में अपने अंदर के संकट से लड़ते और बचने का उपाय करते हुए दुनिया बिरादरी की चिंता, आवश्यकतानुसार सहयोग, मदद आदि का जैसा व्यवहार किया है उसकी प्रशंसा चारों ओर हो रही है। पत्रकार वार्ता में हाइड्रोक्लोरोविन को लेकर एक बार रिटैलिएशन शब्द प्रयोग करनेवाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी प्रधानमंत्री मोदी की फिर प्रशंसा करने लगे हैं। ब्राजील के राष्ट्रपति जायर बोलसोनारो ने तो कह दिया कि मोदी ने हनुमानजी की संजीवनी बुटी की तरह हमारी मदद की है। वह दवा कितना कारगर है यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन मूल बात है संकट के समय दिल बड़ा करके दुनिया की मांग को पूरा करने के लिए आने आना। कोविड-19 से निपटने को आधार बनाकर अनेक देशों के नेता मोदी एवं भारत की प्रशंसा कर चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित कई विश्व संगठन भारत की प्रशंसा कर रहे हैं।

हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चीन द्वारा अपने यहां कोरोना कोविड-19 को नियंत्रित करने की भी प्रशंसा की है, लेकिन इसी कारण उसे आलोचना भी सुननी पड़ रही है। कई नेताओं ने कहा है कि यह विश्व स्वास्थ्य संगठन की जगह चीन स्वास्थ्य संगठन बन गया है। इसकी चर्चा का उद्देश्य केवल यह बताना है कि चीन को लेकर किस तरह का गुरुरा दुनिया में है। इसके विपरीत भारत ने एक परिपक्व, संवेदनशील, मतभेदों को भूलाकर मानवता का ध्यान रखते हुए कोरोना संकट का सामना करने के लिए दुनिया को एकजुट करने के लिए प्रभावी कदम उठाने वाले देश की छवि बनाई है। आखिर चीन को आलोचना से बचाने के लिए भी खुलकर भारत के प्रधानमंत्री ही सामने आए। यह वही चीन है जो मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित करने के रास्ते लगातार बाधा खड़ी करता रहा, जो कश्मीर मामले पर पाकिस्तान के साथ रहता है, भारत के न्यूयॉर्क सप्ताई ग्रुप में प्रवेश की एकमात्र बड़ी बाधा है तथा सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का विरोधी भी।

भारत के पास भी मौका था चीन विरोधी भावनाओं को हवा देकर उसके खिलाफ माहौल मजबूत करने का। भारत ने इसके विपरीत प्रतिशोध की भावना से परे संयम एवं करुणा से भरे देश की भूमिका निभाई। जैसा हमने कहा प्रधानमंत्री या सरकार के किसी मंत्री ने अभी तक चीन को कठघरे में खड़ा करने का बयान नहीं दिया है, जबकि इसके पूरे आधार मौजूद हैं। चीन ने अपने यहां फंसे भारतीयों को निकालने की अनुमति देने में देर की थी। उस समय भी भारत अपना धैर्य बनाए रखते हुए औपचारिक अनुरोध करता रहा और उसकी अनुमति मिलने के बाद पुहान से अपने और कुछ दूसरे देशों के लोगों को निकाला। दुनिया ने यह प्रकरण भी देखा है। इस समय एक दूसरी स्थिति भी पैदा हुई है।

कोरोना वायरस पर काबू करने के बाद चीन ने कई देशों का मेडिकल सामग्रियां भेजनी शुरू की। इससे उसे भारी लाभ हो रहा है। पर ज्यादातर देश चीन की इस बात के लिए आलोचना कर रहे हैं कि उसने उसे ऐसी सामग्रियां भेजीं जो मानक पर खरे नहीं उतरती। कई देशों ने शेष ऑर्डर भी रद्द कर दिए हैं। चीन द्वारा निर्यात किए गए पीपीई के पूरी तरह अनुपयोगी होने की शिकायतें आ रही हैं। यहां तक कि स्वयं को चीन का करीबी मानने वाले पाकिस्तान में चीनी मास्क एवं अन्य सामग्रियों को बेकार कहा जा रहा है। भारत में भी उसके रैपिड टेस्ट किट विफल हो गए। एक तो चीन द्वारा समय पर दुनिया को कोरोना वायरस में सूचना न देने को लेकर गहरी नाराजगी और उस पर घटिया सामग्रियों की आपूर्ति को लेकर दुनिया का मनोविज्ञान कैसा निर्मित हो रहा होगा इसकी कल्पना आसानी से की जा सकती है।

नेताओं से ज्यादा गहरी नाराजगी और असंतोष जनता के अंदर है। आज अगर सर्वेक्षण करा लिया जाए तो भारत सहित पूर्वी एशिया के कोरोना प्रभावित देश जापान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, पूरा पश्चिम यूरोप, अमेरिका... सब जगह आम लोग कुछ अपवादों को छोड़कर एक स्तर में चीन को कोरोना वायरस प्रसार का दोषी ठहराएंगे। मीडिया में अलग-अलग देशों के आ रहे सर्वेक्षणों से इसकी पुष्टि भी होती है। कई देशों में चीन पर मुकदमा कर हर्जाना वसूलने की भी मांग हो रही है। चीनी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार निर्यात व्यापार से प्राप्त आय है। इस बात की संभावना बन रही है कि कोरोना महामारी से निकलने के बाद दुनिया के अनेक देश चीन से संबंधों को लेकर पुनर्विचार करें। इसमें दुनिया पर बढ़ता चीन का दबदबा कमजोर भी हो सकता है।

दूसरी ओर भारत को देखिए। भारत पहला देश था जिसने चीन में सहायता सामग्री भेजी। अपनी समस्या में उलझे

हुए भी अनेक देशों में भारत आज भी सहायता सामग्री भेज रहा है। मदद भेजने वालों में सार्क सदस्यों के साथ मलेशिया जैसे देश, जिसने अनुच्छेद-370 एवं नागरिकता कानून पर भारत के खिलाफ बयान दिया वह भी शामिल है। इसमें ईरान भी शामिल है जहां हमने तैब के साथ अपने स्वास्थ्यकर्मी भी भेले हैं। संयुक्त अरब अमीरात में भी सामग्रियों के साथ कुशल स्वास्थ्यकर्मी भेजे गए हैं। चीन ने तो कोरोना संकट के दौरान बाहर की सुध तक नहीं ली। उसने पूर्वी एशियाई देशों की बैठक बुलाने की सोचा भी नहीं। इसके समानांतर भारत एकमात्र देश है जिसने पहले अपने पड़ोसी दक्षिण एशियाई देशों के संगठन सार्क तथा बाद में दुनिया के प्रमुख देशों के संगठन जी-20 की बैठक बुलाने की पहल की। गुट निरपेक्ष देशों की वर्चुअल शिखर बैठक में भी इसकी प्रमुख भूमिका थी। संकट में फंसे एक-एक देश के नेता से प्रधानमंत्री मोदी लगातार बातचीत कर न केवल उनका आत्मबल बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं बल्कि साथ मिलकर सामना करने की भी बात कर रहे हैं। इससे संबंध के नए सिरे से विकसित होने का आधार भी बन रहा है। भारत विश्व के अगुआ देश के रूप में उभरा है।

वास्तव में चीन के व्यवहार में कभी वैश्विक हित की चिंता नहीं दिखी। भारत का चरित्र संकीर्ण स्वार्थों तक सिमटे रहने वाले देश की नहीं बनी है। कोरोना संकट में दुनिया के हित की चिंता और उस दिशा में आगे बढ़कर काम करने का उसका चरित्र ज्यादा खिला है। भारत के प्रधानमंत्री की भूमिका एक विश्व नेता की बनी है। ये कारक अवश्य ही कोरोना के बाद उभरने वाली अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को ठोस रूप में प्रभावित करेंगे।

- ई-30, गणेश नगर, पांडव नगर  
कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110092, मो.नं.:  
9811027208



# कोरोना: जैविक युद्ध और अन्य निहितार्थ

- कर्नल प्रदीप जैदका

**कोरोना** वायरस की तीव्रता और प्रसार दुनिया के लिए अभूतपूर्व रहा है। इससे पहले की सभी महामारियों का असर या तो छोटे क्षेत्रों पर हुआ था या कुछ ही समय में वे खत्म हो गई थीं। मौतों की बात करें तो 1347 और 1351 के बीच यूरोप में चरम पर पहुंचने वाली 'ब्लैक डेथ' ने यूरेशिया और उत्तरी अफ्रीका में 7.5 करोड़ से 20 करोड़ लोगों की जान ले ली थी। चर्नोबिल आपदा का असर यूरोप के कुछ इलाकों तक सीमित था। मलेरिया, फाइलेरिया, चेचक, मैड काउ डिजीज, चिकनगुनिया जैसी परजीवियों से फैलने वाली महामारियों का असर लंबे समय तक रहा और उचित समय में उन पर काबू पा लिया गया। 2018 तक कुल 3.79 करोड़ लोग एचआईवी के शिकार हो चुके थे। लेकिन इस आंकड़े तक पहुंचने में कई वर्ष लग गए। इनके उलट कोरोना ने महज तीन महीने में पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया। चिकित्सा और शोध में जबरदस्त प्रगति के बाद भी शोध संस्थान तथा दवा कंपनियां अब तक इसकी काट नहीं बना पाई हैं।

कोरोना का कालक्रम और प्रभाव का अध्ययन काफी रोचक है। कोरोना संकट को शुरुआत में गुप्त जैविक युद्ध का आरंभ माना गया। हरेक युद्ध के अस्थायी, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभाव होते हैं, जो निश्चित क्षेत्रों या पक्षों से संबंधित होते हैं। कोरोना भी अपवाद नहीं है। दुनिया ने देखा कि किस तरह दूरदर्शिताहीन ढिठाई की घटनाओं ने स्थिति और भी गंभीर कर दी। इसके दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण धार्मिक सम्मेलन और व्यक्तिगत हरकतें (ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और भारत) रहीं, जिनसे वायरस फैला।

कोरोना के प्रसार, रोकथाम और खबरों में इतनी तेजी से बदलाव आ रहा है, जो पहले कभी नहीं देखा गया। यह लेख खुले स्रोतों से 15 अप्रैल तक मिली जानकारी पर आधारित है और इसमें महामारी के पीछे साजिश होने की तमाम अवधारणाओं को एकदम पर रखा गया है।

## आरंभिक प्रतिक्रियाएं

सबसे पहले वुहान में बीमारी शुरू होने पर शुरुआती प्रतिक्रियाएं ताज्जुब भरी थीं- 'जरा उन्हें तो देखो!' और बाद में पूछा गया कि 'चीन ने स्वीकार करने में इतनी देर क्यों लगा दी?' अंतरराष्ट्रीय मदद फौरन शुरू नहीं हुई। दिसंबर में महामारी शुरू होने के बाद 17 जनवरी तक चीन द्वारा उसे जानबूझकर छिपाने या कम बताने के आरोपों का चीन ने जवाब दिया और अमेरिकी नौसैनिकों पर आरोप मढ़ दिया। उसने कहा कि नौसैनिक अभ्यास के दौरान उन्हीं से वायरस चीन में आया।

## प्रसार और इनकार

चीन से आई शुरुआती खबरों में यह बात बाहर नहीं आने दी गई कि महामारी बहुत भीषण है और पूरी दुनिया में फैल सकती है। लापरवाही और इनकार से भी बात बिगड़ी क्योंकि कहा गया- 'यहां नहीं हो सकती।' जब विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इस बीमारी को महामारी घोषित कर दिया तो दुनिया भर में आपदा प्रबंधन योजना एवं तैयारियों की कलाई खुलने लगी। 'सामूहिक प्रतिरोधक क्षमता' वाली अपुष्ट अवधारणाओं, विभिन्न पहलुओं की समझ नहीं होनेय दूरदर्शिता भरे कारगर समाधान शुरू करने में देरी, रेस्पिरेटर और संक्रमण के मामलों को सीधे संभाल रहे व्यक्तियों या जनता के लिए मास्क जैसे व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों (पीपीई) की कमी के कारण भी रोकथाम जोर नहीं पकड़ पाया।

सोशल डिस्टेंसिंग यानी दैनिक दूरी, संक्रमण के संभावित वाहकों की जांच जैसे कड़े कदम समय पर नहीं उठाए गए। इस कारण अमेरिका, ब्रिटेन और इटली में रोकथाम के प्रभावी उपाय लागू करने से पहले भारी संख्या में लोगों की जान चली गई। उसके बाद स्टेडियमों, थिएटरों और खुली जगहों को अस्थायी अस्पतालों में बदला गया।

दूसरी ओर सीमित बुनियादी ढांचे और भारी आबादी की चुनौतियों से जूझते भारत ने शुरू से ही पूरे देश में बंदी यानी लॉकडाउन तथा सोशल डिस्टेंसिंग लागू कर दी। इसका फायदा भी मिला चाहे लोग आरोप लगाते रहे हों कि उचित जांच किट नहीं होने के कारण संक्रमण का आंकड़ा कम है। (भारत में होने वाले उल्लंघनों और स्वामियों की चर्चा अलग से की गई है)।

## आर्थिक

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर होने वाले प्रभावों पर कई लोग चर्चा कर चुके हैं और यहां उस पर विस्तृत चर्चा नहीं की गई है। संक्षेप में कहें तो दुनिया भर में शेयर बाजार तुड़क गए, बैंकों की ब्याज दरें कम हुईं, वाहनों की बिक्री घटी, औद्योगिक उत्पादन और परिवहन ठप हो गया। आवाजाही पर प्रतिबंध के कारण श्रमबल की उपलब्धता और कंपनियों की ओर से यात्रा कम हुई हैं। घर से काम करने का चलन बढ़ गया। सोना-चांदी जैसी कीमती धातुएं फिर चमक गईं। विकसित देशों में ब्राह्मणों के देखते ही देखते दराजें खाती हो गईं। कुछ वस्तुओं के दाम इतने बढ़ गए कि उन पर लगाम कसने के लिए सरकार को दखल देना पड़ा।

इस बात के संकेत भी मिल रहे हैं कि अमेरिका व्यापार युद्ध तेज कर रहा है। अमेरिका (और उसके सहयोगियों) के पास से आती

चुनिंदा खबरें और उनके जवाब में चीन के दावों से आर्थिक गिरावट और बदतर हो गई है।

चीन अपने पास माल जमा होने का फायदा उठाकर ऊंची कीमत मांग रहा है। साथ ही इटली द्वारा खरीदे गए उपकरण घटिया गुणवत्ता वाले निकले, जिसकी वजह से चीन की अंतरराष्ट्रीय छवि और भी खराब हो गई। चीन से अपना निवेश निकालने का जापान का फैसला महत्वपूर्ण है। ऐसी और भी घटनाएं हो सकती हैं।

### प्रभाव

**अल्पकालिक:** ज्यादातर दुनिया चैकन्नी होकर चीन की ओर देख रही है। खबरें बताती हैं कि चीन से काम करने वाली कंपनियों और व्यापार पर निर्भरता घटी है। फिर भी उत्पादन और भंडारण के मामले में दुनिया का बड़ा अड़्डा होने का फायदा चीन उठा रहा है। जनवरी 2020 में जब पुहान में महामारी चरम पर थी तब उसने ऑस्ट्रेलिया और दूसरे देशों से मास्क तथा अन्य सुरक्षा वस्त्र थोक में खरीद डाले। लेकिन बाद में जब इन्हीं देशों ने चीन से माल मांगा तो उसने ऊंची कीमत मांगनी शुरू कर दी। उत्पादन इकाइयों को चीन से हटाकर कहीं और लगाने में कुछ सयम लगेगा। लेकिन यह चर्चा का मुद्दा है कि चीन से अपना निवेश निकाल रहे देश उसे अपने ही यहां निवेश करेंगे या नहीं। संभावना यही है कि निवेश किसी तीसरे देश में किया जाएगा। जब तक देश नया कारोबार नहीं लगाते हैं तब तक चीन पर निर्भरता बनी रहेगी।

वित्तीय बाजार लुढ़क चुके हैं। कहीं-कहीं बाजार ने थोड़ी पलटी मारी है, लेकिन पहले जैसी स्थिति आने में करीब दो वर्ष लग जाएंगे। जहां व्यावहारिक है, वहां कंपनियों ने कर्मचारियों को 'घर से काम करने' की इजाजत दे दी है। सरकारों ने वेतन नहीं काटने की सलाह दी है, लेकिन व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपना राजस्व बचाएंगे। भर्तियों और वेतन में कुछ प्रतिशत कटौती होने की संभावना है, जो कम से कम एक वर्ष तक चलेगी। इसीलिए कर्मचारी भी बचत करने की कोशिश करेंगे और निवेश की उनकी भ्रूष कम हो जाएगी। शेयर बाजारों के लिए ये अच्छे संकेत नहीं हैं।

खरीदारी जरूरी सामान तक सीमित रह जाएगी और ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों तरीके से खरीदारी होगी। बैंकिंग गतिविधियों में भी ऐसा ही होगा। व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट ऋण आने बढ़ाए जाएंगे, लेकिन शर्तें बहुत कठोर होंगी।

**मध्यकालिक:** चीन के बैंकों ने अपनी कंपनियों को विदेश में कारोबार स्थापित करने के लिए कर्ज दिया। इसका फायदा उठाकर उन्होंने विस्तार किया और स्थानीय बाजारों में कंपनियां खरीदीं। ऐसा कुछ और समय चलेगा। पूंजी लगाना मुश्किल भरा होगा। रकम जुटाने और उधारी दरें तय करने की मौजूदा रणनीतियां नए सिरे से बनाई जाएंगी और ज्यादा सख्त कदम उठाए जाएंगे।

लंबी दूरी की यात्रा और विदेश यात्रा घट गई हैं क्योंकि देशों ने यात्राओं पर रोक लगा दी है। भविष्य में कंपनियों की यात्राओं का

कुछ हिस्सा आभासी बैठकों से ही पूरा कर लिया जाएगा। सामान की आपूर्ति के सिद्धांत मामूली अवरोधों के अलावा सुगम आवाजाही से जुड़े थे। लेकिन अब उन पर गंभीरता से पुनर्विचार करना होगा तथा भंडारण एवं वितरण के पारंपरिक तरीकों के विकल्प ढूंढे जाएंगे। महामारी के दोबारा हमले के लिए हर देश को तैयार रहना होगा क्योंकि वायरस लौटकर चीन पहुंच गया है।

**दीर्घकालिक:** मूल देश के बाहर इकाई ले जाने की जो चर्चा ऊपर की गई है उसके लिए सौदेबाजी और छानबीन होगी। इसीलिए चीन की जिस 'ऋण कूटनीति' का खतरा हाल ही में सामने आया है, उसका फैसलों पर प्रभाव पड़ेगा और जल्द से जल्द सहयोग के लिए नए द्विपक्षीय या अंतरराष्ट्रीय रिश्ते गढ़े जाएंगे।

नए कामकाजी माहौल में ऑटोमेशन, कंप्यूटराइजेशन, कृत्रिम मेधा (एआई) और वैश्विक नेटवर्क वाले परिचालन में इजाफा दिखेगा। नए साझेदार देशों के कार्यबल को इनसे जुड़े कौशल सीखने और बढ़ाने होंगे। इससे नए समीकरण बनने की संभावना भी दिख सकती है। लेकिन आखिरी नतीजे दो वर्ष से भी अधिक समय के बाद ही सामने आने की संभावना है।

दुनिया की वाणिज्य और व्यवसाय से जुड़ी भावनाएं चीन से अलग होती दिख रही हैं। मलेशिया, कोरिया, भारत जैसे वैकल्पिक ठिकानों और बांग्लादेश, श्रीलंका एवं अल्पविकसित देशों जैसे छोटे सहयोगियों को इसका फायदा मिल सकता है।

बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) से जुड़े देशों में से कुछ को बतौर साझेदार तरजीह दिए जाने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता। ध्यान रहे कि बीआरआई देशों को अभी चीन का कर्ज चुकाना है या वित्तीय मदद वापस करनी है। बीआरआई के लिए मिलने वाली सहायता हासिल करने के चक्कर में उन्होंने चीन को लंबे समय तक रियायत देने का सौदा भी किया है, जिसमें बंदरगाहों की सुविधाएं, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल परियोजना स्थल पर चीनी प्रबंधकों एवं कंपनियों को मौजूद रहने की अनुमति शामिल है। इसलिए इन देशों को वास्तव में कितना फायदा होगा, कहा नहीं जा सकता।

ट्रंप के लिए चुनावी नतीजे कुछ भी रहें, अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध को नई दिशा मिलना तय है। पूरी दुनिया में प्रशासनिक एवं लॉजिस्टिक्स, स्थानीय प्रशासन, सामाजिक, आर्थिक, भू-राजनीतिक समीकरण नए सिरे से बिठाए जाएंगे ताकि ऐसी घटनाओं से निपटा जा सके।

### भारतीय संदर्भ: चुनौतियां एवं उत्लंघन

चूंकि यह आपदा अभूतपूर्व थी, इसलिए भारत के सामने भी वैसा ही संकट आया, जैसा पूरी दुनिया के सामने आया था, लेकिन कई वजहों से यहां संकट कुछ ज्यादा था। भारत की प्रतिबंध लगाने की पहलों का फायदा मिला है और उसकी तारीफ भी हुई है। हालांकि सीमित संसाधनों और बुनियादी ढांचे के कारण कई तरह के नुकसान भी हुए। फिर भी सरकार ने महामारी से लड़ने और उसे काबू में करने को ही पहली प्राथमिकता बनाया।

स्थानीय स्तर पर दूरदर्शिताहीन राजनीतिक रस्साकशी के कारण और केंद्र के किसी भी निर्देश का विरोध करने पर आमादा आबादी के एक हिस्से के कारण स्थिति और भी गंभीर हो गई क्योंकि वह आबादी अपने सीमित और फौरी हितों एवं नतीजों से परे देखने के लिए तैयार ही नहीं थी। इसके उदाहरण भी हैं - आधिकारिक घोषणाओं और संकट बढ़ने के खतरे के बाद भी मजदूरों का थोक में अपने गांवों की ओर लौटनाय कुछ खास धार्मिक सभाओं के एक वर्ग द्वारा की गई ऐसी हरकतें जो आम तौर पर वे अपने घरों में रोजमर्रा की जिंदगी में नहीं करते! सोशल डिस्टेंसिंग के उल्लंघन, कानून प्रवर्तन एवं चिकित्सा सेवाओं में लगे लोगों पर पथराव करने और उनके साथ मारपीट करने की घटनाएं बताती हैं कि सरकारी तंत्र के लिए नई समस्याएं खड़ी करने की साजिश काम कर रही है।

इन निहित स्वार्थों और दूरदर्शिताहीन षड्यंत्रों के कारण अजीब पेचीदा स्थिति पैदा हो गई, जहां नियंत्रण करने वाले कड़े कदमों को दमन कहा जाएगा हलके कदमों की आलोचना की जाएगी और कोई कदम नहीं उठाया गया तो कहा जाएगा कि इन घटनाओं पर काबू नहीं कर सके या किए-धरे पर पानी फेर दिया।

ऐसी गतिविधियों से निपटने के लिए कोई भी कानून या तरीका फौरन नहीं अपनाया जा सकता इसीलिए वायरस की महामारी के लिए उसका कोई मतलब ही नहीं है।

सोशल मीडिया ने दोहरा काम किया- आधिकारिक नीतियों का प्रसार किया मगर उससे ज्यादा गलत सूचना इसके जरिये फैलाई गई। विडंबना यह है कि आबादी को फायदा तो दिखा, लेकिन गलत सूचना का असर खत्म होने के बाद गलत सूचना के लिए धन की कमी नहीं दिखी और एचडीएफसी के शेयर खरीदने के लिए बैंक ऑफ चाइना के पास भी धन की कमी नहीं दिखी। सोशल मीडिया सामग्री पर आंशिक प्रतिबंध लगाने और विदेशी धन की आमद रोकने के लिए नीतियां बनाते समय गहराई से विचार-विमर्श करना होगा।

दूसरी ओर भारत में हवा और पानी प्रदूषण मुक्त हो गए! लेकिन हमारी जनता की और फितरत और संवेदनहीनता देखते हुए इस बात में संदेह है कि आबोहवा इतनी साफ बनी रहेगी।

#### उठाए गए कदम

जैसा इन गंभीर परिस्थितियों में होता ही है, सरकार ने समय-समय पर निर्देश जारी किए। सरकारी योजनाओं को परखने के लिए कुछ तबकों ने सामूहिक कार्यक्रम किए, जिससे पहले बनाई गई योजना की स्वामियां नजर आ गई। इसके बाद फौरन नियम बदले गए, जिसके कारण कामकाजी स्तर पर भ्रम पैदा हो गया।

अधिकारियों ने शुरुआत में जो आश्वासन दिए, उनमें बाद में कमी आ गई। मिसाल के तौर पर राज्य सरकारों ने अपनी जिम्मेदारी खुद पूरी करने के बजाय गुरुद्वारों और स्थानीय लोगों से मुफ्त रसोई चलाने की अपील की। पहले नियोक्ताओं से कहा गया कि कर्मचारियों का वेतन नहीं काटें मगर बाद में कहा गया कि 'मानवीय आधार पर वेतन' दें। सर्वोच्च न्यायालय ने भी शुरुआत में वायरस की जांच के लिए किसी से भी पैसे लेने की मनाही की थी। लेकिन जल्द ही फैसला बदल दिया गया और मुफ्त जांच केवल उनके लिए कर दी गई, जो मुफ्त इलाज के पात्र हैं।

जिन क्षेत्रों में पकी हुई फसल खड़ी थी, उनमें कटाई की पारंपरिक तरीकों आगे बढ़ानी पड़ी क्योंकि मजदूर नहीं थे और आवाजाही पर रोक थी। इसकी वजह से छह महीने बाद खाद्यान्न भंडार खत्म होने के निराशा भरे अनुमान लगने लगे और वक्त पर कटाई के लिए छूट देनी पड़ी।

एक ओर निजी संगठनों ने संक्रमण दूर करने यानी सैनिटाइज करने के सस्ते तरीके तैयार किए और अपनाए तथा सचल परीक्षण किट भी बनाई। अधूरी तैयारी के आरोपों के बीच चिकित्सा सामग्री एवं परीक्षण किट उपलब्ध कराए गए। फिर भी स्थिति संभालने के लिए आयात समेत तमाम इंताजाम किए गए। रेल डिब्बों को सचल अस्पताल ट्रेन में बदलना अच्छा कदम था और उससे अस्पतालों में शैयाओं की संख्या बढ़ गई। सुरक्षा वस्त्रों की कमी हुई और उसका ध्यान रखना होगा।

#### भविष्य

इस अनुभव से गुजरने के बाद भारत को भविष्य में इसी तरह की स्थितियों से निपटने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होना पड़ेगा। आपदा प्रबंधन की विस्तृत निष्पक्ष समीक्षा करनी होगी उससे जुड़ी योजनाएं बनानी होंगी, लेकिन अभी भारी निवेश करना उचित नहीं होगा।

ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए सशस्त्र बलों को शामिल किया जाता है क्योंकि उन्हें कामकाज के माहौल में बार-बार तथा बहुत अधिक बदलावों के साथ भी काम करने का ज्यादा अनुभव होता है। तो संकट आने पर बुलाने के बजाय उन्हें आपदा नीतियां एवं प्रतिक्रियाएं तैयार करने वाली समितियों में ही औपचारिक प्रतिनिधित्व क्यों नहीं दे दिया जाए। अंत में यह ध्यान रहे कि देश के हित ही सबसे ऊपर हैं और तुच्छ राजनीतिक स्वार्थों की बलि देनी होगी।

- मूल अंग्रेजी,

अनुवाद: शिवानन्द द्विवेदी

स्रोत: <https://www.vifindia-org/>



# योग का अनुष्ठान

- दीपक खैर



**21 जून, 2020** को सम्पूर्ण विश्व छठवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाएगा। भारत के आग्रह पर 2015 से प्रारंभ इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में विश्व के लगभग सभी देश उत्साह से सहभागी हुए हैं और प्रतिवर्ष उनकी सहभागिता और उत्साह में निरंतर वृद्धि ही होती रही है। किन्तु इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विशेष होगा।

इस वर्ष 2020 में मनुष्य के अस्तित्व के लिए संघर्ष हो रहा है। इसके पहले ऐसा न कभी देखा गया, न ही किसी ने सोचा ऐसी एक कल्पनातीत परिस्थिति से मनुष्य का साक्षात्कार हो रहा है। एक अकल्पनीय काल से मानवता गुजर रही है। इससे कब उबरेंगे, कभी उबरेंगे भी या नहीं और उसके बाद का जीवन कैसा होगा, यह सब एक प्रश्न ही है!

ऐसी विविध और विषम परिस्थिति में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस क्या मायने रखता है?

योग जीवन के प्रबंधन का शास्त्र है। यह प्राकृतिक विज्ञान है। यह प्राकृतिक नियमों से बंधा है, और जीवन का उद्धार इसका लक्ष्य है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का घोषित उद्देश्य है- “योग - समरसता और शांति के लिए”। आज की परिस्थिति में

विश्व को अगर कुछ चाहिए तो वह है- समरसता और शांति। विश्व स्तर पर समरसता और शांति जब आएगी तब आएगी, किन्तु प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समरसता और शांति की नितांत आवश्यकता है। आज मानवता जिस आपदा से गुजर रही है, उसके कारण के मूल में समरसता और शांति का अभाव है।

मनुष्य ने स्वयं को सृष्टि की अन्य रचनाओं से अलग मान लिया, स्वयं विधाता होने का भ्रम पालने लगा, सृष्टि मनुष्य के उपभोग के लिए है- यह उसके बुद्धि बल की भ्रामक धारणा बन गई। सृष्टि की शेष रचनाओं के साथ सहजीवन उसने नकार दिया, क्योंकि उसकी दृष्टि में वे अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। शोषण, उपभोग, आपसी संघर्ष, स्वार्थ - यह जब मनुष्य जीवन के लिए सामान्य होने लगी, सर्वत्र उसकी अति होने लगी, तब वह सृष्टि के ही कर्म सिद्धांत के गिरफ्त में आ गया है। सम्पूर्ण मानवता आज मुँह छुपाए घूम रही है, सभी एक साझा अपराध के भागीदार हैं- जिन्होंने अपराध किया वह तो जिम्मेदार हैं ही, साथ ही जिन्होंने उसके विरुद्ध आवाज नहीं उठाई वे भी जिम्मेदार हैं।

तो इस परिस्थिति में योग का क्या महत्व हुआ? उसकी क्या भूमिका है, क्या होगी, और क्या होनी चाहिए?

योग की समरसता सिर्फ मनुष्य तक सीमित नहीं है अपितु उसमें सब जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों, नदियों, वृक्षों, पर्वतों आदि सभी का समावेश है। हालांकि योग के प्रति साधारण व्यक्ति का प्रथम आकर्षण स्वयं का शारीरिक स्वास्थ्य और सौंदर्य होता है, किन्तु अभ्यास करते-करते उसे यह ज्ञात होता है कि शारीरिक लाभ तो हो रहा है, आगे इससे प्राप्त मानसिक, भावनिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी इसका ऐसा परिपूर्ण प्रभाव होता है जिसे हम विलक्षण ही कह सकते हैं।

योगमय जीवन ही मनुष्य को डायनासोर के समान विलुप्त होने से बचा सकता है। क्या होता है योग करने से?

योग - एक जीवन पद्धति का नाम है। एक ऐसी जीवन पद्धति जिसमें सृष्टि की हर रचना एक दूसरे से तारतम्य रखकर जीती है। सृष्टि में प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक जीव परस्पर निर्भर, परस्पर संबंधित एवं परस्पर जुड़े हुए हैं। सबके जीवन का, प्रत्येक घटना का, प्रत्येक के व्यवहार का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता रहता है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि सृष्टि में जब एक परमाणु भी हिलता है तो उसके साथ पूरी सृष्टि को खींचता हुआ जाता है। इतने सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यदि ऐसा है तो हमें जीने के लिए दूसरों के जीने के अधिकार को बनाए रखना है। 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत पर मानवता को जीना है। किसी भी बात की अति न हो इसका ध्यान रखना है। योग हमें यम के माध्यम से यही शिक्षा देता है।

आगे आनेवाले समय में हमें अष्टांग योग के 'यम' के अंग को अपने व्यवहार में परिणत करने को प्राथमिकता देनी होगी। अष्टांग योग का प्रथम अंग 'यम' हमें समाज में कैसा रहना है इसका ज्ञान देता है। मनुष्य, मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार करें, मनुष्य अन्य जीवों के साथ कैसा व्यवहार करें, मनुष्य प्रकृति के अन्य रचनाओं के साथ कैसा व्यवहार करें, यह यम में है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह - इनका पालन सद्जीवन हेतु आवश्यक है। मनुष्य का मनुष्य के प्रति ऐसा व्यवहार तो होना ही चाहिए, साथ ही अन्य पशु और वनस्पति के साथ भी हमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन करना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द जब सर्व समावेशकता की बात कहते हैं- उसमें सृष्टि की प्रत्येक रचना का समावेश होता है।

अब तक योग में आसन और प्राणायाम को ही व्यवहार में लाने की प्राथमिकता रही है, क्योंकि मनुष्य को उसके शरीर से बहुत आसक्ति होती है, उसका बहुत आकर्षण होता है। वह अपने बाह्य स्वरूप के प्रति बहुत सजग रहता है, रहे, व्यक्तिगत स्तर पर सजग रहे, स्वस्थ रहे, सुंदर रहे, आनंद में रहे- किन्तु उसे यह भी स्मरण में रहे कि दूसरे भी ऐसा ही रहना चाहते हैं। उनका वह अधिकार भी है। इसलिए उनके अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण न करते हुए जिएं।

इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में हम आसन, प्राणायाम के साथ 'यम' पर भी विचार करें। यम के अनुसार अपना जीवन ढालने का संकल्प लें। सृष्टि की प्रत्येक रचना के साथ रहने की, उसकी क्षमता का विकास करें- तभी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सार्थक होगा, मनुष्य के भविष्य को सुरक्षित करेगा।

21 जून, 2020 को सारे विश्व के देश आसन-प्राणायाम करने के पश्चात्-

सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।  
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदुःखभाग्भवेत्॥

- इस शांतिमंत्र को आत्मसात करें, मन से करें, उस दिन सारे वातावरण को इस मंत्र के स्पंदन से व्याप्त कर दें, इसी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की सार्थकता होगी। इससे सम्पूर्ण वातावरण में सकारात्मकता का संचार होगा। जिस भय और आशंका से विश्व आज ग्रस्त है, उसका निराकरण होगा। योग का संदेश - समरसता और शांति - सार्थक होगा।

- जीवनव्रती कार्यकर्ता,

प्रकल्प संगठक,

विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग,

जोधपुर (राजस्थान)

कोरोना को हराएंगे, नया भारत बनायेंगे, योग की शक्ति से शरीर मन प्राण को

ऊर्जावान बनायेंगे, आइये जुड़िये ऑनलाइन योग सत्र से

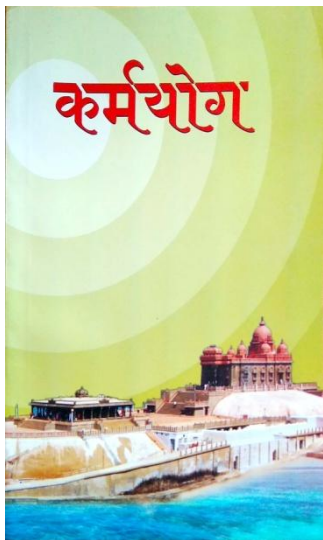
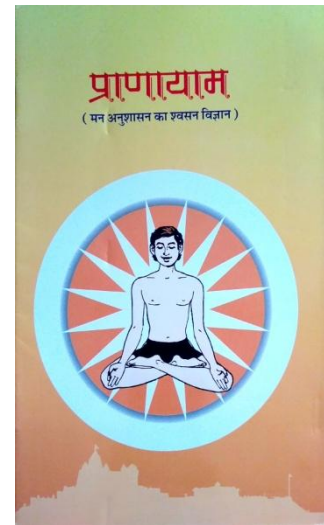
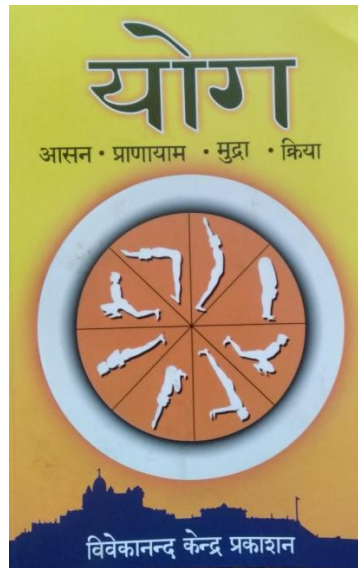
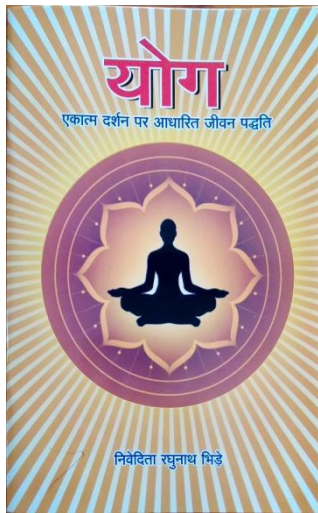
१० से २० जून २०२०, यू tube पर ऑनलाइन

गूगल फॉर्म भरिये - [https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfrOYs3-T6F5SoN8EV5MmnR0F\\_OsMAMUD5rk1qgwvviHDuHXw/viewform](https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfrOYs3-T6F5SoN8EV5MmnR0F_OsMAMUD5rk1qgwvviHDuHXw/viewform)

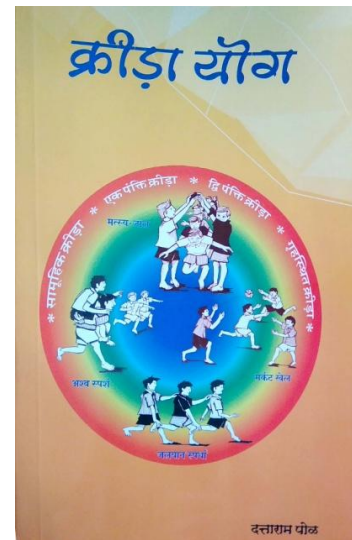
विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी - राजस्थान प्रान्त द्वारा आयोजित

# अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष

## योग के साहित्य का सेट विशेष मुल्य पर



**योग** के साहित्य  
का सेट विशेष मुल्य पर  
235/- का साहित्य  
मात्र **190/-** में



डाक व्यय अतिरिक्त, सम्पर्क करें - विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, जोधपुर  
email: [vkhpv@vkendra.org](mailto:vkhpv@vkendra.org), Ph: 0291-2612666



## अरुणाचल के संस्मरण:

# जीवन का सही परिप्रेक्ष्य में देखने की दृष्टि

- विश्वास लपालकर

एक बार मुझे रोहरी वलब के निमंत्रण पर एनआईटी दुर्गापुर में एक विशेषज्ञ शिक्षक के रूप में वहां के विद्यार्थियों के लिए आयोजित एक व्यक्तित्व विकास शिविर में सहभागी होने का अवसर मिला। वह तीन दिवसीय निवासी शिविर था जिसमें लगभग 50-60 छात्र-छात्राएं सहभागी थीं।

एक रात, दिनभर के कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात्, मैंने उत्तर-पूर्वांचल के छात्र-छात्राओं के साथ एक अनौपचारिक चर्चा का सत्र रखा गया। क्षेत्रीय काँलेज होने के कारण उसमें उत्तर-पूर्वांचल के सभी राज्यों के विद्यार्थी थे। हालांकि शिविर में उत्तर-पूर्वांचल के 50-60 सहभागी थे, किंतु उस अनौपचारिक गपशप के कार्यक्रम में 15-16 विद्यार्थी उपस्थित थे।

हमेशा की तरह प्रारंभिक परिचय और सामान्य सामाजिक बातचीत के पश्चात् मैंने उन विद्यार्थियों से भोजनशाला के बारे में, भोजन के बारे में पूछा। अचानक लगभग सभी विद्यार्थी भोजनशाला प्रबंधन के विरुद्ध ऊंची आवाज में भोजन के स्तर, भोजन सामग्री में विविधता के अभाव, इत्यादि नकारात्मक बातों की

शिकायत करने लगे। मेरे लिए उस चर्चा को नियंत्रित करना कठिन होने लगा।

तभी एक अरुणाचल प्रदेश की छात्रा ने मुझसे पूछा- “सर, आपने हमसे भोजन संबंधी प्रश्न क्यों किया? हम यहां भोजन करने मात्र नहीं आए हैं अपितु अध्ययन हेतु आए हैं। आपने हमसे यहां की लाइब्रेरी, यहां की प्रयोगशालाएं, यहां के शिक्षक और उनके पढ़ाने की पद्धति, यह सब पूछना चाहिए जो हमारे अध्ययन से संबंधित हो। यहां भोजन हमारी प्राथमिकता नहीं है, और जो भी हमारे रुचि का भोजन चाहिए वह हम यहां से लौटकर घर जाकर ग्रहण कर सकते हैं।

अरुणाचल प्रदेश की उस छात्रा के विस्मयकारी, सकारात्मक और जीवन के उद्देश्य से परिपूर्ण दृष्टिकोण से मैं स्तब्ध रह गया। उसने मुझे जीवन को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में सहायता दी।

- जीवनव्रती कार्यकर्ता,  
प्रान्त संगठक, महाराष्ट्र

**विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी द्वारा कोरोना वैश्विक महामारी से ग्रस्तों के लिये सेवा कार्य केन्द्र की राष्ट्रव्यापी शाखाओं के माध्यम से हो रहा है।  
लखनऊ, जम्मू, जयपुर, अजमेर, ग्वालियर,  
हैदराबाद, कडपा, मदुरई, कालुबालु, वल्लियूर,  
तेनकासी, गंगापट्टनम (भुवनेश्वर), अन्य अनेक  
स्थानों में सेवाकार्य हो रहा है।**

## 12 जून पुण्य तिथि पर विशेष:



## जोशिया जॉन गुडविन

स्वामी विवेकानन्दजी के विश्वप्रसिद्ध भाषण लिखने का श्रेय 'जोशिया जॉन गुडविन' को है। स्वामीजी उन्हें बड़े प्रेम से कहा करते थे- "मेरा निष्ठावान गुडविन (My faithful Goodwin)"। गुडविन का जन्म 20, सितम्बर, 1870 को इंग्लैंड के बैथेस्टोन में हुआ था। उनके पिता जोशिया गुडविनजी भी एक आशुलिपिक (stenographer) एवं सम्पादक थे। गुडविन ने भी कुछ समय पत्रकारिता की, पर सफलता न मिलने पर वे आस्ट्रेलिया होते हुए अमेरिका आ गए।

**स्वामी विवेकानन्दजी** के सन 1895 में न्यूयार्क प्रवास के दौरान एक ऐसे आशुलिपिक की आवश्यकता थी, जो उनके भाषण ठीक तरह से और तेजी से लिख सके। इसके लिए कई लोग लगाए गए, पर इस कसौटी पर केवल गुडविन ही खरे। 99 प्रतिशत शुद्धता के साथ 200 शब्द प्रति मिनट लिखने में गुडविन को कौशल प्राप्त था, यह उनकी विशेषता थी। स्वामी विवेकानन्दजी के भाषणों को सुनकर उसे शुद्धता के साथ तेजी से लिखने में माहिर गुडविन इसके पहले कई वरिष्ठ एवं प्रसिद्ध लोगों के साथ काम कर चुका था। अतः उसे उचित पारिश्रमिक पर इस कार्य के लिए नियुक्त कर लिया गया, पर स्वामीजी के भाषण सुनते-सुनते गुडविन का हृदय परिवर्तन हो गया। उन्होंने पारिश्रमिक लेने से स्पष्ट मना कर दिया और अपनी सेवाएं निःशुल्क देने लगे।

उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा, "मुझे अब पैसा मिले या नहीं, पर मैं उनके प्रेमजाल में फंस चुका हूँ। मैं पूरी दुनिया घूमा हूँ। अनेक महान लोगों से मिला हूँ, पर स्वामी विवेकानन्द जैसा महापुरुष मुझे कहीं नहीं मिला।"

एक निष्ठावान शिष्य की तरह गुडविन स्वामीजी की निजी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखते थे। वे उनके भाषणों को आशुलिपि में लिखकर शेष समय में उन्हें टाइप करते थे। इसके बाद उन्हें देश-विदेश के समाचार पत्रों में भी भेजते थे। स्वामीजी प्रायः हर दिन दो-तीन भाषण देते थे। अतः गुडविन को अन्य किसी काम के लिए समय ही नहीं मिलता था। सन् 1895-96 में स्वामीजी ने कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और राजयोग पर जो भाषण दिए, उसके आधार पर स्वामीजी के सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ बने हैं।

स्वामीजी ने स्वयं ही कहा था कि ये ग्रन्थ उनके जाने के बाद उनके कार्यों का आधार बनेंगे। उन दिनों गुडविन छाया के समान स्वामी विवेकानन्दजी के साथ रहते थे।

स्वामीजी भाषण देते समय किसी और लोक में खो जाते थे। कई बार तो उन्हें स्वयं ही याद नहीं आता था कि उन्होंने व्याख्यान या श्रोताओं के साथ हुए प्रश्नोत्तर में क्या कहा था? ऐसे में गुडविन उन्हें उनके भाषणों का सार दिखाते थे। स्वामीजी ने उसकी प्रशंसा करते हुए एक बार कहा कि गुडविन ने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। उसके बिना मैं कठिनाई में फँस जाता।

अप्रैल, 1896 में स्वामीजी के लंदन प्रवास के समय भी गुडविन उनके साथ थे। जनवरी, 1897 में वे स्वामीजी के साथ कोलकाता आ गए। गुडविन वहां सब मठवासियों की तरह भूमि पर सोते थे तथा दाल-भात खाते थे। वे दार्जिलिंग, अल्मोड़ा, जम्मू तथा लाहौर भी गए। लाहौर में उन्होंने स्वामीजी का अंतिम भाषण लिखा। फिर

वे मद्रास आकर रामकृष्ण मिशन के काम में लग गए। उन्होंने 'ब्रह्मवादिन' नामक पत्रिका के प्रकाशन में भी सहयोग दिया। पर मद्रास (अब चेन्नई) की गरम जलवायु से उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। अतः वे उटी आ गए। वहीं 2 जून, 1898 को केवल 28 वर्ष की अल्पायु में उनका देहांत हो गया। स्वामीजी उस समय अल्मोड़ा में थे। समाचार मिलने पर स्वामीजी के मुँह से निकला, "मेरा दाहिना हाथ चला गया।" उटी में ही स्वामी विवेकानन्द के इस प्रिय शिष्य का स्मारक बनाया गया है।

गुडविन इस लिखित सामग्री को 'आत्मन' कहते थे। शार्टहैंड में लिखे ऐसे हजारों पृष्ठ उन्होंने एक छोटे संदूक में रखकर अपनी मां के पास इंग्लैंड भेज दिए थे, जिनका अब कुछ भी पता नहीं है। इनमें स्वामीजी के भाषणों के साथ ही उनके कई भाषाओं में लिखे पत्र भी हैं।

- संकलित

## गांधी दर्शन में टिकाऊ विकास के मंत्र

- लखेश्वर चंद्रवंशी 'लखेश'



**मोहनदास** करमचंद गांधी नामक एक साधारण मनुष्य आज पूरे विश्व में विख्यात है। विख्यात इसलिए नहीं कि उनके पास बहुत बड़ी सम्पत्ति थी अथवा शारीरिक दृष्टि से वे अधिक बलशाली थे या फिर वे किसी बड़े राजनीतिक पद पर आरूढ़ थे। फिर भी आज की दुनिया के बड़े पदों पर बैठे राजनेताओं से लेकर सामान्य जनता के बीच वे आदरणीय हैं, वंदनीय हैं क्योंकि वे संसार के सभी मनुष्यों, प्राणियों और प्रकृति से बहुत प्रेम करते थे। उनकी विचारधारा मानवता का संवाहक है। इसलिए उनके नेतृत्व को देशवासियों का भरपूर समर्थन मिला। उनकी प्रेरणा से गांव-गांव में स्वतंत्रता प्राप्ति की ललक बढ़ी। साधारण से साधारण व्यक्ति देश

के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत होता गया और वह स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानी बने। यह बात भी उल्लेखनीय है कि चंद्रशेखर आजाद जैसे अनगिनत क्रांतिकारियों के बचपन में देशभक्ति का भाव जाग्रत करने में गांधीजी के आंदोलन अथवा सत्याग्रह ने बड़ी भूमिका निभाई। भले ही इन क्रांतिकारियों ने बाद के दिनों में सत्याग्रह के मार्ग के बदले सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाया फिर भी उनके प्रारम्भिक देश-कार्य की प्रेरणा गांधीजी ही रहे। पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "गांधी भारतवर्ष के अनेक युगों के संचित पुण्य का मधुर फल था।"

(कल्पलता, पृ.130)



अपने देश व समाज में बढ़ी विषमता, अनैतिकता जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए महात्मा गांधी सत्य का आग्रह करते थे। गांधीजी की दृष्टि में “सत्य ही ईश्वर है”। ईश्वर के निकट जाना है तो हमें पापमुक्त होना होगा। ये पाप व्यक्तिगत कम परंतु सामाजिक अधिक हैं। इसी के कारण समाज में वैमनस्क बढ़ता है, दूरियाँ बढ़ती हैं और समाज का विकास वहीं रुक जाता है। समाज का दीर्घकालिक विकास (सस्टेनेबल डवलपमेंट) करना है तो हमें समाज से इन विकृतियों को समाप्त करना होगा। ये सात विकृतियाँ या पाप हैं- तत्वहीन राजनीति, श्रम बिना सम्पत्ति, विवेकहीन उपभोग, शील बिना ज्ञान, नीतिहीन व्यापार, मानवताविहीन विज्ञान तथा समर्पणरहित पूजा। जब तक इस विकृति को जड़ से नहीं मिटाया जाएगा तबतक स्वार्थपरक मानसिकता समाज को अपनी जाल में फंसाकर ही रखेगा। अतः मनुष्य समाज में दिखनेवाले भेदभाव, प्राणियों तथा वन्यजीवों के प्रति क्रूरता तथा प्रकृति का शोषण करनेवाली मानसिकता को दूर करने के लिए आदर्श की स्थापना करनी होगी। स्वदेशी, स्वावलम्बन, स्वच्छता, नैतिकता और कर्तव्य को आदर्श बनाना होगा और उसकी प्रतिष्ठा को प्रस्थापित भी करना होगा। तभी समाज का विकास सतत गतिमान होगा और संतुलित भी। गांधीजी ने राजनीतिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सशक्तिकरण में गहरा संबंध देखा। उन्होंने ऐसे देश की कल्पना की थी, जिसमें हर नागरिक के लिए गरिमा व समृद्धि हो। जब संसार में अधिकारों की बात होती है तो गांधीजी कर्तव्यों पर जोर देते हैं। ‘हरिजन’ पत्रिका में उन्होंने लिखा, “जो अपने कर्तव्यों को व्यवस्थित ढंग से पूरा करता है उसे अधिकार अपनेआप मिल जाते हैं।” मानवता में भरोसा रखने वालों को एकजुट करने से लेकर टिकाऊ विकास को आगे बढ़ाने और आर्थिक स्वावलम्बन सुनिश्चित करने तक गांधीजी हर समस्या का समाधान देते हैं।

गांधीजी सत्य, शांति, अहिंसा, स्वदेशी के आग्रही हैं। उनके विचार एक ओर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने को प्रेरित करते हैं, वहीं चुनौतियों के समाधान का उत्तम और सरल उपायों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे कहते थे कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य सर्वदा स्वावलम्बी होता है और बल तो उसके स्वभाव में ही होता है। समाज को न्याय के पथ पर चलने की प्रेरणा देनेवाले मोहनदास करमचंद गांधी अपने विचारों और सादगी पूर्ण जीवन के कारण “महात्मा” कहलाए। यहाँ इसका भी उल्लेख करना आवश्यक है कि महात्मा गांधी के जीवन में स्वामी विवेकानन्द के विचारों का बड़ा प्रभाव था। स्वामी विवेकानन्द ने जिस तरह जन साधारण के उत्थान के लिए जो विचार दिए थे उसे महात्मा गांधी ने अपनी कार्ययोजना का आधार बनाया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, “जब गरीब लोग शिक्षा लेने नहीं या सकते, तो शिक्षा को ही उनके पास - खेत में, कारखाने में और हर जगह पहुंचना होगा।”

स्वामी विवेकानन्द ने यह भी कहा था, “नया भारत निकल पड़े - हल पकड़कर, किसानों की कुटी भेदकर, मछुए, मात्ती, मोची, मेहतारों की कुटीरों से। निकल पड़े बनियों की दुकानों से, भुजवा

के भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से। निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से। इन लोगों ने हजारों वर्षों तक नीरव अत्याचार सहन किया है- उससे पाई है अपूर्व सहनशीलता। सनातन दुःख उठाया, जिससे पाई है अटल जीवनशक्ति। ये लोग मुझी भर सतू खाकर दुनिया को उलट सकेंगे। आधी रोटी मिली, तो तीनों लोक में इतना तेज न अटकेगा। ये रक्तबीज के प्राणों से युक्त हैं। और पाया है सदाचार-बल, जो तीनों लोक में नहीं है। इतनी शांति, इतनी प्रीति, मौन रहकर दिन-रात इतना खटना और काम के वक्त सिंह-विक्रम! अतीत के कंकालों! यही है तुम्हारे सामने तुम्हारा उत्तराधिकारी भावी भारता।”

असहयोग आंदोलन से पूर्व महात्मा गांधी वर्ष 1921 में बेलुड़ (कोलकाता) गए थे स्वामी विवेकानन्द की समाधि का दर्शन करने। गांधीजी ने लिखा, “मैं आज (6 फरवरी, 1921 को) यहाँ (बेलुड़ मठ में) स्वामी विवेकानन्द के जन्म-दिवस पर उनकी पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने आया हूँ। मैंने स्वामी विवेकानन्द के ग्रंथ बड़े ही मनोयोग के साथ पढ़े हैं और इसके फलस्वरूप देश के प्रति मेरा प्रेम हजारों-गुना बढ़ गया है। युवकों से मेरा अनुरोध है कि जिस स्थान पर स्वामी विवेकानन्द ने निवास किया, वहाँ से कुछ प्रेरणा लिए बिना, खाली हाथ न लौटें।” महात्मा गांधी के इस उक्ति से पता चलता है कि वे स्वामीजी से कितने अधिक प्रभावित थे। स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय मरिात्क को पुनर्जाग्रत करने का जो कार्य किया और भारतीय आत्मा को जिस तरह नया जीवन दिया उससे ही महात्मा गांधी को देश की स्वतंत्रता के लिए जनमानस को जाग्रत करने का आधार मिला। इसी तरह सामाजिक और धार्मिक सुधारों के विषय में भी स्वामी विवेकानन्द ने गांधीजी को जो पृष्ठभूमि उपलब्ध कराई उसकी अपेक्षित चर्चा हमारे इतिहास में होनी चाहिए। दुर्भाग्य है कि इस दिशा में कोई प्रयत्न होता दिखाई नहीं दिया। स्वामीजी ने कहा था- “शिव भावे जीव सेवा” और दरिद्र नारायण की सेवा। गांधीजी ने इसी दर्शन को स्वीकार किया और गांधीजी ने कहा, “ईश्वर का सबसे अच्छा नाम दरिद्रनारायण है।” गांधीजी ने गांवों में रहने वाले गरीब जनता अर्थात् दरिद्रनारायण की सेवा के लिए, उनके उत्थान के लिए ग्राम स्वराज की परिकल्पना को आकार देने के लिए एक अलग विचार विकसित किया।

### ग्राम स्वराज और ग्रामीण विकास

भारत गांवों का देश है। भारत की अधिकतम जनता गांवों में निवास करती है। महात्मा गांधी कहते थे कि ‘वास्तविक भारत का दर्शन गांवों में ही सम्भव है जहाँ भारत की आत्मा बसी हुई है।’ गांधीजी की इसी उक्ति से प्रेरित होकर हिन्दी के अनेक कवियों ने ग्रामीण जीवन पर कविताएं लिखीं। कवि सुमित्रानंदन पंत ने “भारत माता ग्रामवासिनी” शीर्षक से कविता लिखी:-

खेतों में फैला है श्यामल,  
धूल भरा मैला सा आँचल,  
गंगा यमुना में औसू जल,  
मिट्टी कि प्रतिमा उदासिनी।

हम गांधी साहित्य का अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि महात्मा गांधी के समग्र चिन्तन एवं दर्शन का केन्द्र गांव ही रहे हैं। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक अथवा स्वावलम्बन आदि के लिए गांधीजी ने जो विचार दिए वह “ग्राम स्वराज” की स्थापना के लिए था। गांधीजी के वैचारिक चिन्तन का आधार लेकर ही स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में विकास की संरचना का केन्द्र गांव को माना जाता है। उनके विचारों का आधार लेकर आज भी ग्राम विकास की योजना बनाई जाती है। इसलिए गांधीजी के ग्राम स्वराज की संकल्पना को समझना होगा।

‘स्वराज’ यानी ‘अपना राज’ अथवा ‘आत्मनिर्भर’। गांधीजी के ‘स्वराज’ की अवधारणा अत्यन्त व्यापक है। गांधीजी के स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्तर पर विदेशी शासन से स्वतंत्र प्राप्त करना नहीं है, अपितु इसमें सांस्कृतिक व नैतिक स्वाधीनता का विचार भी निहित है। गांधीजी की स्वराज संकल्पना राष्ट्र निर्माण में परस्पर सहयोग बल देता है। वास्तव में यही ‘सच्चे लोकतंत्र का पर्याय’ है। गांधीजी का स्वराज ‘अभावग्रस्तों का स्वराज’ है, जो दीन-दुखियों के उद्धार के लिए प्रेरित करता है। यह आत्म-संयम, ग्राम-राज्य व सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर बल देता है। गांधीजी ने ‘सर्वोदय’ अर्थात् सर्व-कल्याण का समर्थन किया है। उनकी दृष्टि में आदर्श समाज-व्यवस्था वही हो सकती है, जो पूर्णतः अहिंसात्मक हो। गांधीजी के अनुसार, जहां हिंसा का विचार ही नहीं रहेगा, वहां ‘दण्ड’ या ‘बल-प्रयोग’ की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। आदर्श समाज की कल्पना करते हुए गांधीजी ने अपने भाषण में कहा था, “हम ऐसा स्वराज चाहते हैं जिसमें सभी व्यक्तियों को, भंगियों तक को समान अधिकार प्राप्त हों।”<sup>5</sup>

गांधीजी ग्रामों के विकास व ग्राम स्वराज्य के लिए सहकारी खेती, ग्राम पंचायतों व सहकारी संस्थाओं को आवश्यक बताते थे। गांधीजी की कल्पना के ग्राम स्वराज्य में आर्थिक अवस्था ही आदर्श नहीं, अपितु सामाजिक अवस्था भी आदर्श थी, इसीलिए वे सभी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन पर जोर देते थे। अस्पृश्यता व मद्यपान जैसी सामाजिक बुराइयों के वे घोर विरोधी थे। वे इन्हें ग्रामों की प्रगति में भी बाधक मानते थे। गांधीजी शराब एवं अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन के सख्त विरोधी थे।

### स्वच्छ भारत अभियान

गांधीजी स्वच्छता के प्रति बड़े सजग थे और कठोरता से स्वच्छता का पालन करते थे। प्रतिदिन सुबह उठकर प्रार्थना करना उनके दिनचर्या का भाग रहा है उसी तरह झाड़ू हाथ में लेकर अपने आवास परिसर की स्वच्छता करते थे। गांधीजी भारतीयों में स्वच्छता के प्रति उदासीनता की कमी को अनुभव करते थे। वे जानते थे कि किसी भी सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदंड की आवश्यकता है। महात्मा गांधी के समय स्वच्छता कोई साधारण कार्य नहीं रहा। गांधीजी सामाजिक क्रांति और स्वाधीनता आंदोलन के अनुयायी थे। सत्य और अहिंसा के हथियार से समाज में फैले छल-कपट, झूठ-फरेब तथा हिंसा से मुक्त कर उसे स्वच्छ बनाने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, गांधीजी ने मन की शुद्धता पर बल दिया। ऊंच-नीच के अंतर को समाप्त करने

को लेकर उन्होंने सघन स्वच्छता अभियान चलाया। गांधीजी की सोच थी, “स्वच्छ भारत, स्वच्छ लोग और स्वच्छ मन न केवल आंदोलन में सहायक होंगे, बल्कि भारत की स्वतंत्रता हेतु यह एक सफल हथियार भी होगा।” कांग्रेस के लगभग प्रत्येक सम्मेलन में, अपने भाषण में गांधीजी ने स्वच्छता की बात कही। 25 अगस्त, 1925 को कलकत्ता अब (कोलकाता) में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा, ‘वह (कार्यकर्ता) गांव के धर्मगुरु या नेता के रूप में लोगों के सामने न आए बल्कि अपने हाथ में झाड़ू लेकर आए। गंदगी, गरीबी निहत्लापन जैसी बुराइयों का सामना करना होगा...।’<sup>6</sup>

पंचायतों की भूमिका के संबंध में गांधीजी ने कहा था कि गांव में रहनेवाले प्रत्येक बच्चे, पुरुष या स्त्री की प्राथमिक शिक्षा के लिए, घर-घर में चरखा पढ़वाने के लिए, संगठित रूप से सफाई और स्वच्छता के लिए पंचायत जिम्मेदार होनी चाहिए। 19 नवम्बर, 1925 के यंग इंडिया के एक अंक में गांधीजी ने भारत में स्वच्छता के सम्बन्ध में लिखा। उन्होंने लिखा, ‘देश के अपने भ्रमण के दौरान मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ गंदगी को देखकर हुई... इस संबंध में अपने आप से समझौता करना मेरी मजबूरी है।’<sup>7</sup>

गांधीजी ने भारत में ‘स्वच्छता के प्रति जागरण’ लाने के हर सम्भव प्रयत्न जीवनभर करते रहे। उन्हीं की प्रेरणा से भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गांधी की जयंती पर 2 अक्टूबर, 2014 से “स्वच्छ भारत अभियान” का शुभारम्भ किया। भारत सरकार के इस पहल पर समूचे देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। इस अभियान का उद्देश्य महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर सही रूप में श्रद्धांजलि देते हुए स्वच्छ भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना है। इस पहल से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस और तरल अपशिष्ट पदार्थ प्रबंधन की गतिविधियों/कार्यक्रमों के माध्यम से स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है। देश के लाखों गांवों को खुले में शौचमुक्त बनाया जा चुका है। हालांकि अभी भी इस दिशा में बहुत आगे जाना शेष है। उल्लेखनीय है कि 1930 के दशक में स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गांधीजी ने लोगों को जोड़ने का महान कार्य किया था। स्वच्छ भारत के उस समय के अभियान ने भारतीयों को संगठित किया था जबकि आज के भारत में स्वच्छता अभियान का आशय है- ताजगी, उत्तम स्वास्थ्य, पर्यटन का विकास और आर्थिक लाभ। लोग स्वच्छ और स्वस्थ होंगे तो अस्पताल के खर्च में भी कमी आएगी। लेकिन इस अभियान की सघन निरंतरता बिना जागरूकता के सम्भव नहीं है।

### कुटीर उद्योग और खादी

ग्रामीण समाज की समृद्धि के सम्बन्ध में महात्मा गांधी का समग्र चिन्तन, श्रेष्ठ मानवीय गुणों से युक्त था। गांधीजी में सत्यनिष्ठा, शोषित व दलित समाज के प्रति स्नेह व संवेदनशीलता, निःस्वार्थ सेवा-भाव, प्रामाणिकता आदि श्रेष्ठ मानवीय गुण थे। यही कारण था कि वे जिन बातों से अत्यन्त दुखी थे, उनमें एक बात ग्रामों की घोर गरीबी भी थी। शहरों की समृद्धि में सबसे बड़ा योगदान देने के बावजूद गांवों में रहनेवाले लोगों की गरीबी देखकर गांधीजी को

गहन पीड़ा होती थी। गांधीजी का दृढ़ मत था कि जब तक ग्रामों में घोर गरीबी से त्रस्त लोगों की दयनीय दशा में परिवर्तन लाकर उनके जीवनस्तर में सुधार नहीं किया जाता, तब तक न तो हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता का कोई अर्थ होगा और न इसकी प्रगति का स्वप्न पूरा होगा। गांधीजी गरीबों के प्रति सहृदयता तो थी ही, साथ ही उनमें गरीबों को उस अवस्था से ऊपर उठाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की प्रबल आकांक्षा भी थी। यही कारण था, कि उनके द्वारा ग्रामों के विकास व ग्राम स्वराज के सम्बन्ध में उनके विचारों व कार्यक्रमों के प्रति लोगों की, विशेषकर ग्रामीण जनों की बड़ी आस्था थी। ग्रामीण समुदाय इन कार्यक्रमों में अपने सुखद भविष्य की कल्पना करते थे। गांधीजी द्वारा ग्राम-विकास व ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रस्तुत कार्यक्रमों में प्रमुख थे- चरखा व करघा, ग्रामीण व कुटीर उद्योग, सहकारी खेती, ग्राम पंचायतें व सहकारी संस्थाएं, राजनीति व आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण, अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध, बुनियादी शिक्षा आदि।

गांधीजी ने कहा था, “... हमें इस बात पर शक्ति केन्द्रित करनी होगी कि गांव स्वावलम्बी बनें और अपने उपयोग के लिए अपना माल स्वयं तैयार करें। अगर कुटीर उद्योग का यह स्वरूप कायम रखा जाए तो ग्रामीणों को आधुनिक यन्त्रों और औजारों को काम में लेने के बारे में मेरा कोई ऐतराज नहीं.....।”

स्वतंत्रता के बाद सरकारों ने गांधीजी के अधिकांश कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया। इन कार्यक्रमों के साथ ग्रामों के आर्थिक व सामाजिक विकास के अन्य कार्यक्रम भी संचालित किए। लेकिन इन कार्यक्रमों की उपलब्धियां आशाओं के अनुरूप नहीं रही, क्योंकि गांधीजी के अनेक कार्यक्रमों के प्रति आस्था कम होती जा रही है। गांधीजी के एक सबसे महत्वपूर्ण ‘चरखा व करघा’ की उपयोगिता पाश्चात्य औद्योगीकरण के प्रभाव के कारण अस्वीकृत की जाने लगी है। ग्रामों में कृषि पर सीमित निर्भरता, बढ़ती बेरोजगारी की समस्या और जीविका की तलाश में गांवों से लोगों का पलायन जैसी महत्वपूर्ण समस्या गांधीजी की आर्थिक विचारधारा को अमान्य करने का ही दुष्परिणाम तो नहीं है, इस पर विचार करना चाहिए। गांधीजी की आर्थिक विचारधारा पर ये तीनों बातें लागू नहीं होती हैं। उनका ‘चरखा व करघा’ एवं अन्य ग्रामीण तथा कुटीर उद्योग कार्यक्रम ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या का आज भी समाधान है। यही नहीं ये ग्रामों की आत्मनिर्भरता में भी सहायक हैं।

### गैर सरकारी संगठनों का विकास में भूमिका

महात्मा गांधी ने जिस भाव से ग्रामीण अंचल को स्वस्थ, सुन्दर, शिक्षित और स्वावलम्बी बनाने की बात कही थी, वह कार्य आज भी अधूरा है। आज भी अनगिनत ग्रामीण और वनवासी क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलम्बन को लेकर जो योजनाएं बनती हैं, वह पूरी तरह क्रियान्वित नहीं हो पातीं। कहीं भ्रष्टाचार, कहीं उदासीनता और कहीं केवल दिखावे के लिए कुछ गतिविधियां कर दी जाती हैं। इसलिए आज आवश्यकता है कि महात्मा गांधी के

विचारों के अनुसार अभावग्रस्त सामान्य जनता तक सरकार की योजनाएं पहुंचें। साथ ही गैर सरकारी संगठन उन क्षेत्रों में जनमानस को स्वावलम्बी बनाने की दिशा में निश्चित योजना बनाकर कार्य करें। जैसे- विवेकानन्द केन्द्र की स्थापना के समय ही केन्द्र के संस्थापक श्री एकनाथ रानडे ने अरुणाचल, असम सहित उत्तर-पूर्वांचल में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन और सांस्कृतिक जागरण के लिए कार्य योजना बनाई। आज विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय के रूप में अरुणाचल प्रदेश के प्रत्येक जिले में स्थापना हो चुकी है और गत 48 वर्षों से अरुणाचल प्रदेश में विवेकानन्द केन्द्र कार्य कर रहा है। उल्लेखनीय है कि अरुण ज्योति प्रकल्प, आनंदालय, दक्षिण भारत में ग्राम विकास कार्यक्रम आदि के माध्यम से विवेकानन्द केन्द्र ने ग्रामीण और दुर्गम वनवासी अंचल में सेवा का जो आदर्श खड़ा किया, उसके लिए भारत सरकार ने वर्ष 2015 के लिए “गांधी शान्ति पुरस्कार” प्रदान कर संगठन को सम्मानित किया। इसी तरह 2016 के लिए अक्षय पात्र फाउंडेशन और सुलभ इंटरनेशनल को संयुक्त रूप से, 2017 के लिए एकल अभियान ट्रस्ट और 2018 के लिए कुष्ठरोग उन्मूलन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के सद्भावना दूत योहेई ससाकावा को भी गांधी शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### गांधीजी और शिक्षा

गांधीजी के अनुसार, गांवों के बच्चों और प्रौढ़ों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। बुनियादी शिक्षा इसी का परिणाम है। गांधीजी ने कहा था, “शिक्षा से मेरा प्रयोजन यह है कि बालकों और प्रौढ़ों के शरीर, मन व आत्मा का सर्वांगीण विकास किया जाए। पढ़ना-लिखना न शिक्षा का आरम्भ है, न वह उसका लक्ष्य है। यह स्त्री-पुरुषों की शिक्षा का एक साधन मात्र है। लिखना-पढ़ना स्वयं में कोई शिक्षा नहीं है, अतः मैं चाहता हूँ कि बच्चे का शिक्षण उसे कोई उपयोगी हस्तकला सिखाने से आरम्भ हो और उसकी शिक्षा के आरम्भ से ही उसमें उत्पादन की क्षमता पैदा होना चाहिए। मेरा विश्वास है कि इस शिक्षण पद्धति के द्वारा मन और आत्मा का सर्वोच्च विकास सम्भव है।”

शिक्षा धर्महीन नहीं होनी चाहिए ऐसा गांधीजी का स्पष्ट मत था। 17 अक्टूबर, 1917 को भागलपुर में अपने भाषण के दौरान गांधीजी ने कहा, “जहां धर्म नहीं वहां विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का भी अभाव होता है। धर्मरहित स्थिति बिल्कुल शुष्क होती है, शून्य होती है। हम धर्म की शिक्षा खो बैठे हैं। हमारी पढ़ाई में धर्म को जगह नहीं दी गई है। यह तो बिना दूल्हे की बारात जैसी बात है।” उन्होंने लिखा, “सच्ची शिक्षा तो वह है जिसके द्वारा हम अपने को, आत्मा को, ईश्वर को, सत्य को पहचान सकें।” अतः गांधीजी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में सरकार और गैर सरकारी संगठनों के साथ ही हम सबका कर्तव्य है।



**अंतिम पंक्ति में खड़े मनुष्य का विकास**

गरीब से गरीब व्यक्ति का विकास तभी हो सकता है जब समाज में जातिगत भेदभाव समाप्त होगा। बड़ी विडम्बना है कि जिस देश में ऋषि-मुनि, तपस्वी, संत, महापुरुष और देवताओं ने जन्म लिया, वहाँ आज भी एक गाँव के लोग एक पंक्ति में बैठकर भोजन तक नहीं करते क्योंकि सबकी जात एक समान नहीं है। यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। अस्पृश्यता के सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा, “यह बड़े दुःख की बात है कि आज हमारे लिए धर्म का मतलब खान-पान पर रोक-टोक तथा ऊँच-नीच के भेद के सिवा कुछ नहीं रह गया है। मैं आपको बता दूँ कि इससे बढ़कर और कोई मूर्खता नहीं हो सकती। जन्म से और बाहरी नेम धर्म से कोई बड़ा छोटो नहीं होता। एक मात्र चरित्र ही इसकी कसौटी है। ईश्वर ने मनुष्य को बड़ा या छोटा नहीं बनाया। कोई धर्म ग्रन्थ जो किसी मनुष्य को उसके जन्म के कारण हीन अथवा अछूत करार देता है, हमारी श्रद्धा का पात्र नहीं हो सकता...।”

जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता तो समस्या है ही, पर इससे भी बड़ी समस्या है शिक्षित लोगों की समाज के प्रति कर्तव्य-भाव का अभाव और उदासीनता। सरकार का कार्य हो या गैर सरकारी संगठन अथवा संस्थाएं सभी इस बात के अभाव को अनुभव करते हैं कि कार्य के लिए मनुष्य तैयार नहीं है। पगार देकर भी ग्रामीण अंचलों में कार्य नहीं होता। शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि गांवों या वनवासी क्षेत्र में नहीं रहना चाहते। ऐसे में गरीब से गरीब व्यक्ति तक शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलम्बन का कार्य कैसे पहुंचेगा? इसका उत्तर तो यही है कि शिक्षा में मनुष्य निर्माण को प्राथमिकता देनी होगी और कर्तव्य भी भावना जन-मन में जाग्रत करना होगा। स्वामी विवेकानन्द ने जो विचार दिए, उन विचारों को महात्मा गांधी जी कर दिखाया और दरिद्रनारायण की सेवा का अलख जगाया। उन्होंने प्रकृति के साथ विकास का मंत्र दिया। तत्वहीन राजनीति, श्रम बिना सम्पत्ति, विवेकहीन उपभोग, शील बिना ज्ञान, नीतिहीन व्यापार, मानवताविहीन विज्ञान तथा समर्पणरहित पूजा जैसे जो सात सामाजिक पाप गांधीजी ने बताए, उन पापों से समाज से मुक्त करना होगा तभी समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े मनुष्य का विकास सम्भव हो सकेगा।

**निष्कर्ष**

इस शोध से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि महात्मा गांधी के विचार मानवता के संवाहक हैं। गांधीजी की ग्राम स्वराज्य की संकल्पना को साकार करने के लिए हमें कमर कसनी होगी। भाषा, जाति और साम्प्रदायिकता की संकीर्ण भावना से परे आदर्श समाज के निर्माण के लिए सार्थक प्रयत्न करना होगा। “दरिद्रनारायण की सेवा” का संदेश देश के हर कोने में पहुंचना है। 10 जून, 1932 को छगनलाल जोशी को अपने पत्र में गांधीजी ने लिखा, “विचार ही कार्य का मूल है। विचार गया तो कार्य गया

ही समझो।” अतः विचारों के महत्व को हम समझें और उसे जन-मन में स्थापित करें। विकास कोई एकांगी प्रक्रिया नहीं है। हम विकसित हों और शेष समाज अभावग्रस्त ही रहेगा, यह सोच घातक ही नहीं अवैज्ञानिक भी है। समाज के हर एक वर्ग को उसके वर्तमान स्थिति से ऊपर उठाना होगा, चाहे वह शैक्षिक हो या भौतिक, शारीरिक हो या मानसिक, धार्मिक हो या आध्यात्मिक। हर क्षेत्र में अपने को विकसित करते जाना है। अपनी सोच, अपने विचार और अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर ही देश के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा कर सकेंगे। इसलिए अनुभव करने के लिए हृदय, विचार करने के लिए मस्तिष्क और कार्य करने के लिए हाथ इन तीनों की हमें आवश्यकता है। आइए, आवश्यकता के अनुरूप हम अपने को योग्य बनाएं और अन्यो की क्षमता के विकास के लिए अपना योगदान दें। इस विचार के सिंचन से ही समाज में टिकाऊ विकास की नीति बनेगी और गतिमान संतुलन के साथ दिनोदिन वह विकसित भी होगी।

**सन्दर्भ:**

- 1) मेरा भारत अमर भारत, पृष्ठ 54 2) विवेकानन्द साहित्य, खंड-8, पृष्ठ-167
- 3) प्रबुद्ध भारत, मई 1963, पृ. 170 4) सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 41, पृष्ठ 507
- 5) सूरत की सभा में भाषण, 20 अप्रैल, 1921 6) गांधी वाङ्मय, भाग-28, पृष्ठ 109
- 7) गांधी वाङ्मय, भाग-28, पृष्ठ 461 8) गांधीजी का भागलपुर में भाषण, 17 अक्टूबर, 1917
- 9) गांधीजी का लेख ‘शिक्षा’, 10 जुलाई, 1932 10) पत्र छगनलाल जोशी को, 10 जून, 1932

**अन्य सन्दर्भ:**

कल्पलता - पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी

<https://www-vmvk-org/> <https://www-vkarunjyoti-org/> <https://www-pmindia-gov-in/> <https://www-narendramodi-in/> [hi/ why & india & and & the & world&need&gandhi](https://www-narendramodi-in/hi/why&india&and&the&world&need&gandhi)

- पीएचडी शोध छात्र  
(हिन्दी विभाग: राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज,  
नागपुर विश्वविद्यालय) नागपुर,  
मो.नं.: 9975055437

# ‘परिवार’ मनुष्य की प्रथम पाठशाला

- श्रीमती संध्या शर्मा



**परिवार** मनुष्य की प्रथम पाठशाला है, यह एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो सदस्यों के प्रेम, स्नेह एवं भाईचारा पूर्वक निर्वहन करते हुए उनके आपसी सहयोग व समन्वय से क्रियान्वित होती है। सुसंस्कार, मर्यादा, सम्मान, समर्पण, आदर, अनुशासन आदि किसी भी सुखी-संपन्न एवं खुशहाल परिवार के महत्वपूर्ण गुण होते हैं। कोई भी व्यक्ति परिवार में ही जन्म लेता है, और व्यक्ति के संस्कार व गुण उसके सम्पूर्ण परिवार का परिचय देते हैं। परिवार को आज भी समाज की एक मूल ईकाई माना जाता है।

एक सुसंस्कारित परिवार से बड़ा कोई धन नहीं। कहा गया है पिता से अच्छा सलाहकार नहीं, माता के स्नेह का कोई दुनिया में कोई विकल्प नहीं, भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं, बहन से बड़ा कोई शुभ चिंतक नहीं। अतः परिवार के बिना जीवन की कल्पना असंभव है। एक अच्छा परिवार बच्चे के चरित्र निर्माण से लेकर एक श्रेष्ठ नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोगों से परिवार बनता है और परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व निर्माण होता है। इसलिए कहा गया है-

**अयं निजः परोवेति गणना लघु चेत्सामा  
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकमा।**

अर्थात्: यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों की होती है। इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक कुटुम्ब (परिवार) है। पश्चिमी संस्कृति में परिवार का इतना विशाल और उदार रूप नहीं है। यह भारतीय संस्कृति में ही है जो परिवार या कुटुम्ब को

महत्वपूर्ण माना जाता है और गोत्र के द्वारा अपने परिवार की रक्त शुद्धता की पहचान अक्षुण्ण रखी जाती है। जातीय एवं जनजातीय समाज में ऐसा कोई भी परिवार नहीं मिलेगा जिसका विशिष्ट गोत्र/टोच नहीं होता होगा। यह पाश्चात्य संस्कृति में दिखाई नहीं देता।

बिना परिवार के व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी गतिविधियाँ परिवार में ही होती हैं। डॉ. श्री राम शर्मा परिवार के विषय में लिखते हैं- “समाज की महत्वपूर्ण इकाई परिवार होती है। पारिवारिक जीवन के विश्लेषण से समाज के स्वरूप की स्पष्ट झांकी मिल सकती है।”

परिवार नामक समूह का मूलाधार मानव की अनेक स्वाभाविक मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं, एक स्वाभाविक परिवार में पति अपनी पत्नी से तथा पत्नी अपने पति से प्रेम करती है, सहानुभूति तथा श्रद्धा भाव से जुड़ी रहती है। बच्चे आपस में स्नेह रखते हैं तथा अपने माता-पिता के प्रति आदर, श्रद्धा एवं भक्तिभाव रखते हैं। इसी भावनात्मक जुड़ाव के कारण एक दूसरे के प्रति त्याग करने के लिए तत्पर रहते हैं।

## परिवार की अवधारणा

परिवार विकास एवं विघटन की अनेक अवस्थाओं को पार करता हुआ आदिम काल से चला आ रहा है। अध्ययन की दृष्टि से इसके विकास की अवस्थाओं को मूलतः तीन भागों में बांटा जा सकता है। 1- अग्नियुग (पूर्व वैदिक काल), 2- उत्तर वैदिक युग, 3- पौराणिक युग।

### 1- अग्नि युग (पूर्व वैदिक काल)

प्रारंभिक काल में प्रत्येक परिवार को घर में अग्नि रखनी पड़ती थी। इसका इतना अधिक महत्व था कि लोग अग्नि की देवता के रूप में प्रार्थना करते थे और उससे अपने लिए पुत्रों से फलते-फूलते घर की कामना किया करते थे तथा अग्नि से अपना पारिवारिक संबंध भी जोड़ते थे जो वर्तमान में भी दिखाई देता है तथा आज से तीस चालिस वर्ष पूर्व गांवों में एक दूसरे से घर से अग्नि मांग कर चूल्हा जलाने की परम्परा दिखाई देती थी।

### 2- उत्तर वैदिक काल

यह आर्थिक विकास का युग था, जिसमें पिता पुत्र एवं अन्य परिजन मिलकर परिवार को सम्पन्न बनाते थे। इस युग में पिता को असीमित अधिकार प्राप्त थे, जिससे वर्तस्व को लेकर पिता-पुत्र में विवाद होते थे। परिवार की सम्पन्नता में वृद्धि के साथ साथ वर्तस्व को लेकर होने वाले संघर्ष में परिवार में विभाजन की समस्या को जन्म दिया। परिवार प्रणाली का विघटन इसी युग में प्रारंभ हुआ। चूंकि अधिकतर गृहस्थ कृषक थे इसलिए समाज में विभाजन का आरंभ होने के बाद भी गृहस्थ समाज में पारिवारिक एकता प्रचलित रही।

### 3 - पौराणिक युग

पुराणों की रचना इसी युग में हुई, पौराणिक युग आते-आते समाज में विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई तथा स्वर्जित सम्पत्ति को पृथक् रखने की परम्परा को भी मान्यता मिली। परन्तु विभाजन में पिता की अनुमति के साथ-साथ पिता को ये अधिकार भी मिला कि वह अपनी सम्पत्ति का इच्छानुसार विभाजन करे। यह प्रणाली वर्तमान में भी प्रचलित है।

### भारत को विश्व गुरु बनानेवाली संयुक्त परिवार व्यवस्था

आजकल जहां सब ओर एकल परिवार का चलन देखने को मिल रहा है, वही दूसरी ओर हमारे देश में अनेकों संयुक्त परिवारों ने एकता की मिसाल पेश की है। अनेकों ऐसे परिवार हैं जिनके सदस्य भले ही विभिन्न शहरों में रहते हों, लेकिन प्रमुख त्योहारों और पारिवारिक कार्यक्रमों में अवश्य इकट्ठा होते हैं। आज भी उनके पूरे परिवार का खाना एक ही छत के नीचे बनता है।

यदि संयुक्त परिवारों को समय रहते नहीं बचाया गया तो हमारी आने वाली पीढ़ी ज्ञान संपन्न होने के बाद भी दिशाहीन होकर विकृतियों में फंसकर भटक जाएगी। अनुभव का खजाना कहे जाने वाले बुजुर्गों को अपने परिवार से बिछड़कर वृद्धाश्रम में एकाकी जीवन बिताने को मजबूर हो रहे हैं, जिसे रोकना अत्यंत आवश्यक है। वह दिन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा जब समाज में वृद्धाश्रम की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

आज जबकि पूरा विश्व कोरोना वायरस से पीड़ित है। कोरोना वायरस ने लाँकडाउन में संयुक्त परिवारों की अवधारणा को मजबूत किया है। इन दिनों का लोगों का अनुभव जानें तो पता

चलता है कि इस अवधि में जहां संयुक्त परिवारों में बिना किसी परेशानी के सुश्रियों का माहौल रहा तो वहीं एकल परिवारों में उदासी। एकल परिवारों के लिए एक-एक दिन गुजारना मुश्किल हो रहा है।

इस समय जबकि अनेकों लोग अपना रोजगार छोड़कर घर वापस लौट आये हैं। ऐसे में पुराने जमाने की कहावत थी कि एक बेरोजगार भाई को दो रोजगार वाले भाई पाल लेते हैं, सार्थक होती दिखाई दे रही है। दादी-दादी, नाना-नानी की कहानियां सुनी जाने लगी हैं। बचपन के पुराने विलुप्त हो चले खेल पुनः खेले जाने लगे हैं।

वर्तमान महामारी के समय इससे बचने के उपाय हमें पुनः वैदिककालीन संस्कृति की ओर ले जा रहे हैं। इस अवधि में आत्म चिंतन के पश्चात् परिवार नामक संस्था पुनः सुदृढ़ होना चाह रही है। लोग समझ रहे हैं कि स्वच्छता, आध्यात्मिक चिंतन एवं परिवार के साथ व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबत एवं महामारी से लड़ सकता है तथा प्रकृति के महत्व को पुनरु समझ रहा है।

### अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस कब से और क्यों?

पाश्चात्य संस्कृति में परिवार का महत्व नहीं के बराबर है, वे परिवार के अभाव में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का सामना करते हैं इसलिए उनको परिवार के महत्व को स्वीकार करना पड़ा और दुनिया भर के लोगों को परिवारों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने का संकल्प लेना पड़ा।

उन्होंने परिवार नामक संस्था को मजबूत करने के लिए और लोगों को परिवार से जोड़ने के लिए प्रतिवर्ष 15 मई को दुनियाभर में अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस (International Family Day) मनाने का निर्णय लिया। उन्हें परिवार का यह महत्व समझ में आया कि परिवार में रहकर सर्वांगीण विकास किया जा सकता है तथा यह वार्षिक उत्सव इस बात को दर्शाता है कि वैश्विक समुदाय परिवारों को समाज की प्राथमिक इकाइयों के रूप में जोड़ता है।

वर्तमान में आधुनिक समाज में परिवारों का विघटन इस दिन को मनाने का प्रमुख कारण है अर्थात् जीवन में संयुक्त परिवार की महत्ता बताना। संयुक्त परिवार से जीवन में होने वाली उन्नति के साथ, एकल परिवारों और अकेलेपन के नुकसान के प्रति युवाओं को जागरूक करना भी अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस का मूल उद्देश्य है।

इससे ज्ञात होता है कि लोगों को संयुक्त परिवार और न्यूक्लियर फैमिली के गुण एवं दोष समझ में आ रहे हैं। वर्तमान में व्यक्तियों के चिंतन में है कि उन्हें अपनी संयुक्त परिवार जैसे मूल परंपराओं और वैदिक संस्कृति के ओर वापस लौटना ही होगा। जब परिवार सुदृढ़ और सक्षम होगा तब वो किसी भी आपदा का सामना कर सकता है। इतना तो तय है कि परिवार के बिना समाज एवं राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता।

- सोमलवाड़ा, नागपुर (महाराष्ट्र)



हस्तक्षेप:

## कल्पना और झूठ पर आधारित आयोग की रिपोर्ट

- लोकेन्द्र सिंह

अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यूएससीआईआरएफ) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में भारत के संदर्भ में जो सुझाव दिया है, वह कोरी कल्पनाओं और सफेद झूठ पर आधारित है। यूएससीआईआरएफ ने भारत को 'कुछ खास चिंताओं' वाले उन 14 देशों की सूची में शामिल करने का सुझाव दिया है, जहाँ धार्मिक अल्पसंख्यकों पर उत्पीड़न लगातार बढ़ रहा है। दुनिया भर में धार्मिक स्वतंत्रता के मामलों पर नजर रखने वाली अमेरिका की इस संस्था ने भारत को इस सूची में शामिल करने के लिए जो तथ्य और कथ्य जुटाए हैं, वे शुद्धतौर पर काल्पनिक हैं।

**यू.एस.सी.आई.आर.एफ.** की उपाध्यक्ष नेन्डिन माएजा ने कहा है- "भारत के नागरिकता संशोधन कानून और एनआरसी से लाखों भारतीय मुसलमानों को हिरासत में लिए जाने, डिपोर्ट किए जाने और स्टेटलेस हो जाने का खतरा है।" यह कल्पना नहीं तो और क्या है? इस संदर्भ में यह समझने की भी जरूरत है कि नागरिकता और धर्म, दोनों अलग चीज हैं। लेकिन, इस संस्था ने भारत की छवि खराब करने के लिए दोनों का घालमेल कर दिया। रिपोर्ट में नागरिकता संशोधन कानून (सीए), जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद-370 को निष्प्रभावी करने, गोदल्या और धर्म-परिवर्तन (कन्वर्जन) विरोधी कानूनों को धार्मिक अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के तौर पर रेखांकित किया गया है। श्रीरामजन्मभूमि प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को धार्मिक अल्पसंख्यकों के विरुद्ध उत्पीड़न से जोड़ कर आयोग ने अपनी मर्यादा का उल्लंघन किया है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को सांप्रदायिक चश्मे से देख कर अमेरिकी आयोग ने अपनी नासमझी और मानसिक क्षुद्रता का ही परिचय दिया है।

संस्था की यह राय साफ तौर पर उन लोगों के बयानों/लेखन के आधार पर बनी हुई दिख रही है, जो भारत की छवि खराब करने के षड्यंत्र में शामिल हैं। यदि हम पूरी रिपोर्ट को पढ़ें तो यही समझ आएगा कि यह किसी 'शाहीन बाग के प्रेमी' द्वारा लिखी गई रिपोर्ट है।

वास्तविकता यह है कि नागरिकता संशोधन कानून का किसी भी प्रकार का कोई लेना-देना भारत के धार्मिक अल्पसंख्यकों नागरिकों से नहीं है। इस कानून से भारत के अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न होने की कोई गुंजाइश नहीं है। बल्कि यह तो धार्मिक आधार पर उत्पीड़न का शिकार हुए हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन, ईसाई समुदाय के बंधुओं का संरक्षण करने वाला कानून है। दुनिया जानती है कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में गैर-मुस्लिमों के साथ किस तरह के अत्याचार किए जा रहे हैं। इन देशों से अपनी जान बचाकर भारत में शरण लेने आए धार्मिक अल्पसंख्यकों का स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार देने का सराहनीय काम भारत सरकार ने किया है। अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग को इस कानून के लिए भारत सरकार की प्रशंसा करनी चाहिए थी।

वहीं, राष्ट्रीय नागरिकता पंजीयन (एनआरसी) किसी भी देश का संवैधानिक कार्य है। नागरिकों और घुसपैठियों की पहचान देश की सुरक्षा और संप्रभुता से जुड़ा मामला है। इसका भी संबंध भारत के अल्पसंख्यकों से नहीं है। एनआरसी के जरिये किसी को भी धार्मिक आधार पर डिपोर्ट या नागरिकता से बेदखल नहीं किया जाना है। एनआरसी में कहीं नहीं लिखा कि इसके जरिए धार्मिक अल्पसंख्यकों को डिपोर्ट किया जाएगा। हैरत है कि अंतरराष्ट्रीय संस्था को इतनी सी बात

समझ नहीं आ रही और उसने धर्म एवं नागरिकता का आपस में घालमेल कर दिया। इसलिए भारत सरकार ने उचित ही प्रत्युत्तर यूएससीआईआरएफ को दिया है। भारत के विदेश मंत्रालय ने न केवल आयोग की रिपोर्ट के दावों को खारिज किया है, बल्कि यह भी स्पष्ट कर दिया है कि इसमें भारत के खिलाफ की गई भेदभावपूर्ण और भड़काऊ टिप्पणियों में कुछ नया नहीं है। यह आयोग पहले भी भारत के विरुद्ध दुष्प्रचार करने का प्रयास करता रहा है। लेकिन इस बार गलत दावों का स्तर एक नई ऊंचाई पर पहुंच गया है।

बहरहाल, इस झूठी रिपोर्ट और उसके फर्जी दावों के विरुद्ध आयोग के ही दो सदस्य भारत के पक्ष में खड़े हैं। यह हमारे लिए संतोष की बात है। आयोग के नौ में से दो वरिष्ठ सदस्यों गैरी एल. बाॅर और टेन्जिन दोरजी ने रिपोर्ट से अपनी असहमति भी जतायी है और कहा है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तथा उसे चीन और उत्तर कोरिया जैसे एकाधिकारवादी शासनों के साथ नहीं रखा जा सकता है। कमिश्नर गैरी एल. बाॅर ने रिपोर्ट के दावों से असहमति जताते हुए अपने नोट में लिखा है- 'भारत को सीपीसी (कंप्यूटिंग ऑन पार्टिकलर कंसर्न) सूची में रखे जाने के बारे में अपने साथियों से अलग राय रखता हूँ। भारत कम्युनिस्ट चीन देश की तरह नहीं है, जो सभी धार्मिक विश्वासों से युद्ध लड़ रहा है। भारत दक्षिण कोरिया की तरह भी नहीं है और न ही यह ईरान की तरह है, जहाँ

इस्लामिक चरमपंथी नियमित तौर पर अन्य मत को मानने वालों के सर्वनाश (हालकॉस्ट) की धमकी देते रहते हैं। मुझे विश्वास है कि भारत सदैव धार्मिक स्वतंत्रता के साथ अन्य सब प्रकार की स्वतंत्रताओं के साथ खड़ा रहेगा।' इसी तरह टेन्जिन दोरजी ने अमेरिकी आयोग की रिपोर्ट के प्रति अपनी असहमति में लिखा है- 'भारत एक प्राचीन देश है, जहाँ प्राचीन काल से ही विभिन्न मत-विश्वास को मानने वाले लोग, एक-दूसरे के अस्तित्व को स्वीकारते और एक-दूसरे का सम्मान करते हुए रहते आए हैं। भारत ही वह देश है, जहाँ तिब्बती श्रणार्थी आनंद के साथ रहते हैं। चीन और तिब्बत में भी वे उतने स्वतंत्र नहीं, जितने भारत में हैं।' नागरिकता संशोधन कानून के संदर्भ में भी उन्होंने महत्वपूर्ण टिप्पणी दर्ज कराई है। उन्होंने कहा कि इससे अधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था क्या हो सकती है कि भारत में नागरिकता संशोधन कानून का खुलकर विरोध किया गया। कांग्रेस, कानूनविद, सिविल सोसायटी और अन्य समूहों ने भी इसका विरोध किया है। मीडिया ने भी सीए के पक्ष में और उसके विरोध में खुलकर रिपोर्टिंग की है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस मामले की सुनवाई की है। गैरी एल. बॉर के कहने से स्पष्ट है कि भारत सरकार ने यह कानून जबरन नहीं थोपा है। बल्कि इसके लिए तय संवैधानिक प्रक्रिया का पालन किया गया है। संसद से लेकर सड़क तक भरपूर बहस हुई है, किसी के विरोध को कुचला नहीं गया।

भारत के संदर्भ में जो दावे किए गए हैं, वे इसलिए भी खोखले हैं क्योंकि इसमें

झूठ का भी सहारा लिया गया है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारत में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आने के बाद से भाजपा और हिंदूवादी संगठनों के कार्यकर्ता धार्मिक अल्पसंख्यकों को धमकी देने, उत्पीड़ने करने और हिंसा की बहुत-सी घटनाओं में शामिल रहे हैं। यह कोई तथ्य नहीं है, बल्कि भ्रुद्धतौर पर भारत विरोधी ताकतों के द्वारा चलाए गए प्रोपोगंडा से प्रेरित है। रिपोर्ट में मॉब लिंग्विग की कथित तौर पर बढ़ती घटनाओं को धार्मिक अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के तौर पर रेखांकित किया गया है। इस संदर्भ में झारखंड में तबरेज आलम की हत्या से जुड़े उदाहरण को भी ठीक उसी प्रकार वर्णित किया गया है, जैसा कि भारत की टुकड़े-टुकड़े गैंग करती है। मॉब लिंग्विग में आयोग ने भी वही धूर्तता दिखाई है, जो भारत का तथाकथित सेकुलर दिखाता है। आयोग ने हिंदुओं की माँब लिंग्विग की घटनाओं की अनदेखी की है।

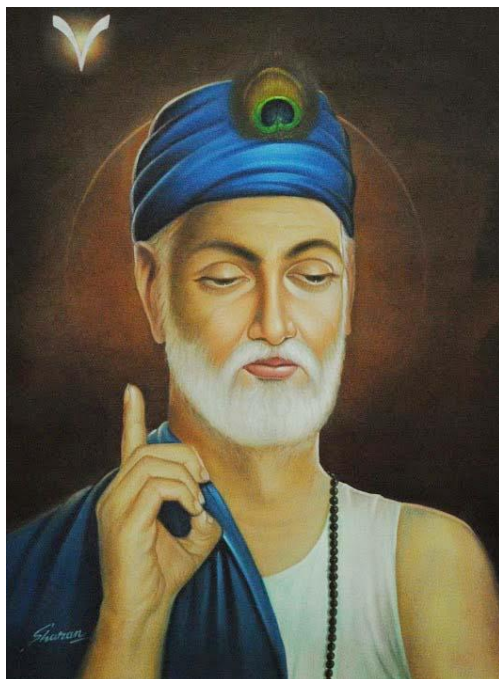
अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग की यह रिपोर्ट ईसाई मिशनरीज के समर्थन में दिखाई देती है, जो भारत की अनुसूचित जाति-जनजाति के कन्वर्जन के आपत्तिजनक काम में संलग्न हैं। आयोग की पीड़ा यह है कि भारत में कन्वर्जन को रोकने के लिए राज्यों ने कठोर कानून क्यों बनाया है? तब क्या आयोग की मंशा यह है कि भारत को ईसाई मिशनरीज के लिए किसी चारागाह की तरह छोड़ दिया जाए। कन्वर्जन को रोकने वाले कानून ईसाई धर्म के बंधुओं का उत्पीड़न करने के लिए नहीं बनाए गए हैं, बल्कि वह

दलित और वनवासी समुदाय को ईसाई मिशनरीज के कन्वर्जन के खेल से बचाने के लिए बनाए गए हैं। यह भी अत्याचार को बढ़ाने वाले कानून नहीं बल्कि विभिन्न मत-विश्वासों का संरक्षण करने वाला कानून है। इसी तरह आयोग को गोहत्या रोधी कानूनों से दिक्कत है। मूक पशु का संरक्षण करने के कानून से भला किस प्रकार धार्मिक अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न संभव है?

कुल मिलाकर यह रिपोर्ट ऐसे ही झूठों का पुलिंदा है। यह उन कपोल कल्पनाओं और प्रोपोगंडा का चिह्न मात्र है, जो वर्षों से भारत विरोधी ताकतों के द्वारा चलाया जा रहा है। इस तरह तथ्यहीन बातों के आधार पर रिपोर्ट तैयार करने अंतराष्ट्रीय संस्था यूएससीआईआरएफ ने स्वयं को ही संदिग्ध बनाया है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश पर अंगुली उठाने से पहले आयोग को अपने ही गिरेबां (अमेरिका में) ही देख लेना चाहिए था कि किस तरह वहाँ नस्लीय एवं धार्मिक भेदभाव और उत्पीड़न किया जाता है। कोरोना महामारी के भयंकर संकट में भी अमेरिका का स्वास्थ्य विभाग नागरिकों के इलाज में भेदभाव कर रहा है।

- माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय,  
बी-38, विकास भवन, प्रेस काम्प्लेक्स,  
महाराणा प्रताप नगर जोन-1,  
भोपाल (मध्यप्रदेश) - 462011  
मो.नं.: 09893072930

## 5 जून कबीर जयंती पर विशेष:



# संत कबीर

- बसन्ती पंवार

**संत** कबीर का नाम साहित्य जगत् में विशेष स्थान रखता है। उनके जन्म के विषय में सटीक जानकारी किसी को नहीं है। कुछ विद्वानों के अनुसार उनका जन्म काशी में सन् 1398 में हुआ था। वहीं कुछ इतिहासकार उनका जन्म सन् 1440 में हुआ मानते हैं, जबकि कबीर पंथ के साहित्यों में वर्णन मिलता है, उसके अनुसार, “विक्रम संवत् 1455 ज्येष्ठ पूर्णिमा, दिन सोमवार को काशी नगरी के लहरतारा क्षेत्र में हुआ।

संत कबीर का प्रादुर्भाव जिस काल में हुआ, उस समय देश के धार्मिक वातावरण में भारी उथल-पुथल मची हुई थी। विभिन्न मत-मतांतरों, धर्मों का प्रचार इधर-उधर उनके अनुयायी कर रहे थे। विधर्मियों द्वारा धर्म परिवर्तन के लिए बल का प्रयोग किया जा रहा था।

प्रत्येक धर्म के दार्शनिक पक्ष में भिन्नता पाई जाती है। सुन्नियों और सूफियों में भी परस्पर मनोमालिन्य कम नहीं था। हिन्दी कविता पर सूफी सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा और एक प्रेम-मार्गी धारा बह निकली। इस धारा के अन्तर्गत आत्मा और परमात्मा का मिलन प्रेम द्वारा कराया गया है। उस समय परिस्थितियां,

सामाजिक क्षेत्र में भी संतोषजनक नहीं थी। हिन्दू समाज में जाति-पाति और छुआछूत की बुराइयां आ चुकी थी। मूर्तिपूजा का प्रचार बढ़ चला था तथा वास्तविकता से लोग दूर भाग रहे थे। जनता में, धार्मिक ठेकेदारों ने भ्रांति-भ्रांति के अंधविश्वास फैला रखे थे और यही दशा मुसलमान जनता की भी थी। हिन्दुओं की व्यवस्थाओं का उन पर भी प्रभाव पड़ा। उनके भी आपस में कई दल बन गए।

ऐसी धार्मिक और सामाजिक परिस्थिति में संत कबीर का जन्म हुआ। संत कबीर का साहित्य परिस्थितिजन्य है और उसमें उस समय की पूरी-पूरी छाप मिलती है। साहित्यिक दृष्टिकोण से यह वीरगाथा काल का भग्नावशेष था। एक नवीन युग का सूत्रपात हो रहा था। भाषा का रूप भी बदल चुका था और वह जनता की प्रचलित भाषा का रूप धारण करती जा रही थी।

संत कबीर ने अपने साहित्य द्वारा हिन्दी में एक नवीन धारा की स्थापना की जिसे साहित्यकारों ने बाद में जाकर भक्तिकाल नाम दिया। कबीरजी ने साहित्य, हिन्दुओं तथा मुसलमानों में सामंजस्य स्थापित करने के निमित्त लिखा और एकेश्वरवाद पर जोर दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं में हिन्दू तथा मुसलमान, दोनों पर ही कसकर छींटे कसे। उन्होंने राम और रहीम में कोई अंतर नहीं



माना। इन नामों की विभिन्नता में फंसकर लोग अपना अहित कर रहे थे, पारस्परिक संघर्ष को बढ़ाकर जीवन की शांति को खो रहे थे, ये उनके लिए दुःख का विषय था। ये तो विभिन्न धर्मों को परमात्मा की प्राप्ति के विभिन्न मार्ग मानते थे। उन्होंने ईश्वर को सगुण और निर्गुण से परे मानकर दोनों विचारधाराओं के पारस्परिक मतभेद को मिटाने का प्रयत्न किया -

सरगुन की सेवा करो, निर्गुन का करो ध्यान। सरगुन निरगुन ते परे, तहाँ हमारा ध्यान॥

संत कबीर ने अपने साहित्य में, हिन्दू तथा मुसलमान, दोनों में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों की कटु आलोचना की -

दुनिया कैसी बावरी, पाथर पूजन जाया घर की चकिया कोई न पूजै, जाका पीसा खाया॥

कबीरजी देवी-देवताओं, पीर-पैगम्बरों, मठ आदि पर नाक रगड़ने को मूर्खता मानते थे। तिलक, माला, चंदन इत्यादि को भी इन्होंने होंग माना। अपने अंतःकरण की शुद्धि पर ही बल दिया। स्पष्ट शब्दों में उन्होंने भक्तों को समझाया कि -

कर का मनका छाड़ि कै, मनका मनका फेर।

दिखावै की बातों में फंसना और उनके द्वारा जनता का अहित करना इनका सिद्धांत नहीं था। उन्होंने समाज में फैली भ्रष्टाचारों तथा कुप्रथाओं का खंडन किया और सद्भावना के साथ जनहित की भावना को लेकर विभिन्न भ्रष्टाचारों को दूर करने का प्रयत्न किया।

कबीरजी का दर्शन हमें उनकी रहस्यवाद की भावना में मिलता है। इस भावना के अन्तर्गत आत्मा की अंतर्निहित प्रवृत्ति शांत और निष्कल रूप से अपना सम्बंध, परमपिता परमात्मा से स्थापित कर लेती है और इस प्रकार दोनों में कोई भेदभाव नहीं रहता। आत्मा शुद्ध होकर इस स्थिति में इतनी पवित्र हो जाती है कि उसे अपने में तथा राम में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। इसी स्थिति में कबीरजी कहते हैं-

ना मैं बकरी, ना मैं भेड़ी ना मैं छुरी गंडास में।

ढूँढ़ना होय तो ढूँढ़ ले बन्दे मेरी कुटी मवास में।

कबीर साहित्य हठयोग की भी विभिन्न प्रकार की उक्तियों से भरपूर है। उनकी रचनाओं में 'हठयोग' की क्रियाओं का विस्तार के साथ वर्णन मिलता है। हठयोग के अनुसार नाड़ी, तत्व और गुणों को आधार मानकर उन्होंने कई रूपक प्रस्तुत किए हैं। निम्नांकित रूपक में शरीर का वादर से मिलान किया गया है -

झीनी-झीनी बीनी चदरिया।

काहे का ताना काहे की भरनी,

कौन तार से बीनी चदरिया?

इंगला, पिंगला, ताना, भरनी,

सुपमन तार से बीनी चदरिया।

अष्ट कमल दल चरखा डोलै,

पाँच तत्व गुन बीनी चदरिया।

साई को बुनत मास दस लागै,

ठोक-ठीक के बीनी चदरिया।

इस प्रकार उनका साहित्य धर्म, अध्यात्म, दर्शन और समाज के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखता है। विचारधारा के अतिरिक्त साहित्य के क्षेत्र में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी भाषा मुख्यतः पूर्वी ही है परन्तु उसमें अवधी, खड़ी, ब्रज, बिहारी, पंजाबी और राजस्थानी का पुट मिलता है। इनके साहित्य में सरस रस की धारा प्रवाहित होती है, साथ ही हृदय की भावना का प्रवाह बहुत ही मार्मिक ढंग से हुआ है। आत्मा के संयोग और वियोग पक्ष को लेकर कवि ने संयोग तथा विप्रलम्भ का सुन्दर निर्वाह किया है। कहीं-कहीं पर भक्त की श्रृंखला से उपमा देकर वीर-रस भी प्रवाहित किया है। अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग कबीरजी की कविताओं में मिलता है।

इस प्रकार संत कबीर का साहित्य हर दृष्टि से सफल और महत्वपूर्ण माना जाता है। यह समय की आवश्यकता का साहित्य था जिसमें कवि ने अपने ज्ञान और सरसता का वह स्रोत प्रवाहित किया जिससे भारतीय जनता के जीवन में सामंजस्य, सुख, शांति और सरसता का संचार किया जा सके।

संत कबीर ने समाज सुधार के लिए कई कविताएं व लेख लिखे, इनमें सबसे प्रमुख 'बीजक ग्रंथ' है, ये तीन भागों- साखी, सबद व रमैनी में वर्गीकृत है। इसके अलावा गुरु महिमा, ईश्वर महिमा, सतसंग महिमा व माया आदि दार्शनिक जीवनी भी लिखी है।

विद्वानों के अनुसार, संत कबीर की मृत्यु सन् 1518 में मगहर में हुई। ऐसा कहा जाता है कि उनके शव के स्थान पर कुछ फूल पड़े हुए मिले, जिन्हें हिन्दू व मुस्लिम समुदायों ने आपस में बांट लिए।

कबीरजी का साहित्य जन-जन की जुबान पर है। यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उस समय था। साहित्यकार ऐसे ही साहित्य की रचना करें जो सुधार के लिए हो, सकारात्मक परिवर्तन के लिए हो साथ ही जन-जन की जुबान पर भी हो।

- 90, महावीरपुरम,  
चैपासनी फनवल्ड के पीछे  
जोधपुर-342008 (राज.)  
मो.-9950538579

व्याख्या-1:कर्म योग श्लोक संग्रह

- महेन्द्र सिंह

**यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुवन्ति दिव्यैः स्तवैः वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गान्तिं यं सामगाः।****ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो- यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणादेवाय तस्मै नमः॥**

ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और मरुद्रुण दिव्यस्तोत्रों द्वारा जिनकी स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अङ्ग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अंत को नहीं जानते उन (परम पुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है।

श्री भगवानुवाच:

(1) **कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः। जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदंगच्छन्त्यनानयम्॥ ॥२-११॥**

समबुद्धि से युक्त ज्ञानीजन कर्मों से उत्पन्न होनेवाले फल को त्यागकर जन्मरूप बन्धन से मुक्त हो निर्विकारपरम पद को प्राप्त हो जाते हैं।

**संधि विच्छेदः** कर्म जम्, बुद्धियुक्ताः, हि, फलम्, त्यक्त्वा, मनीषिणः, जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः, पदम्, गच्छन्ति, अनामयम्॥**अन्वयः** हि (वयोंकि), बुद्धियुक्ताः (सम बुद्धि से युक्त), मनीषिणः (ज्ञानीजन) कर्मजम् (कर्मों से उत्पन्न होने वाले), फलम् (फल को), त्यक्त्वा (त्याग कर), जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः (जन्मरूप बन्धन से मुक्त हो), अनामयम् (निर्विकार), पदम् (परम पद को), गच्छन्ति (प्राप्त हो जाते हैं)।**व्याख्या:**

इस संसार में मानव योनि की प्राप्ति से व्यक्ति को मुक्ति के साधन अपनाने का अवसर की स्वतंत्रता रहती है या यों कहें कि दुर्लभ मानव योनि व्यक्ति को मोक्ष दिला सकती है। ईश्वर ने यह मानव योनि कष्ट भोगने हेतु नहीं दी अपितु उसे अपना सही स्वरूप समझने की योग्यता प्रदान की है, पर व्यक्ति इस लोक की माया में अपने ही प्रपंच में फंस कर कष्ट भोगता है, होना यह चाहिए कि वह अपना प्रारब्ध भोगते हुए ईश्वर भक्ति के द्वारा उसके द्वारा नियत कर्म करे बिना उसके फल की चिन्ता के। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को मोक्ष पाने की स्वतंत्रता दी है, यदि वह शास्त्रसम्मत मनीषियों के द्वारा मार्ग पर चले। एक बार जब व्यक्ति भक्ति मार्ग पर चलता है तो भक्ति के कारण उसे ईश्वर पर पूर्ण आस्था हो जाती है और वह सभी कार्य ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण से करने के कारण वह फल की चिन्ता नहीं करता, इस प्रकार वह अपना मोक्ष मार्ग प्रशस्त करता है। एक बार ईश्वरोन्मुख होने से जहां भक्त को फल की चिन्ता नहीं रहती, वहीं उसकी कार्य कुशलता भी बढ़ जाती है; कारण उसकी पूर्ण शक्ति कार्य सम्पादन में लगती है चिन्ता द्वारा शक्ति का ह्रास नहीं होता। ऐसा भक्त सभी लौकिक कार्यों को ईश्वर द्वारा प्रदत्त अवसर मानता है। ईश्वरोन्मुख होने के

कारण वह लौकिक भावनाओं से मुक्त रहता है और इस कारण से इस लोक के दुःख उसे विचलित नहीं करते और अंततः अपने प्रारब्ध को भोग कर मोक्ष पाकर जन्म मृत्यु के चक्र से भी मुक्त हो जाता है।

इस सृष्टि में मानव कृति की सृष्टि का उद्देश्य कष्ट देना नहीं अपितु इस मानव कृति को मोक्ष प्राप्त करने का अवसर देना है। ईश्वर की योजना के अनुसार व्यक्ति अपने विवेक से कर्मफल की चिन्ता न करते हुए अपने मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करे- इस प्रकार ईश्वरोन्मुख व्यक्ति ईश्वर की इस योजना को समझते हुए समर्पण भाव से कार्य करता है- वयोंकि उसे फल की चिन्ता नहीं रहती तो उसके जीवन में दुःख का स्थान भी नहीं रहता। इस प्रकार व्यक्ति अपने मानव योनि का तात्पर्य समझ लेता है तथा सभी कार्यों को चैतन्य भाव से करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होता है। वास्तविकता तो यह है कि जब व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो जो कष्टों से लिप्त रहता है।

(क्रमशः)

- भुवनेश्वर (ओडिशा)

मो.नं.: 9437007318

# गांधीजी की स्वदेशी नीति वर्तमान में और भी

## प्रासंगिक

- श्रीमती रेखा पाण्डेय

**वैश्विक** महामारी कोरोना से देश में ऋढ़ि-ऋढ़ि मची हुई है, इस वायरस के संक्रमण से देश की जनता को बचाने के लिए शासन ने युद्धस्तर पर प्रबंध किए हैं परंतु लाँकडाउन तीन चरण बीतते तक देश पर आर्थिक संकट आ गया। कारण देश की सारी फैक्ट्रियां, कारखाने, उत्पादन की सारी इकाइयां, बन्द पड़ी हैं। देश के व्यवसाय जगत को अत्यधिक नुकसान का सामना तो करना ही पड़ रहा वहीं लाखों लोग बेरोजगार हो गये हैं। इनमें मुख्य रूप से प्रवासी मजदूरों की दशा अत्यंत दयनीय हो गई। उनके सामने परिवार के भरण-पोषण की समस्या आ गई।

मजदूरों को श्रमबद्ध जीवन की इकाई माना जाता है। यदि मजदूर कन्धा डाल दे तो सारे संसार का विकास रुक जायेगा। मशीनी युग में भी मशीनों को चलानेवाले कुशल व प्रशिक्षित श्रमिक वर्ग ही होते हैं। आज कोरोना वायरस के कारण इन श्रमिकों का जीवन पर संकट आ गया है। ये लाखों प्रवासी मजदूर जो कभी महानगरों और शहरों के आकर्षण में अपने गृह ग्राम और वहां की जमीन को छोड़कर चले गए थे वही अपनी जान की परवाह किये बिना अपने गाँव में वापस जा रहे हैं, क्योंकि वे सत्वाई से भली-भांति अवगत हैं कि जैसे मैं अपनी संतान को भूखा नहीं रहने देती, वैसे उनका गांव उनकी जन्मभूमि उन्हें भूखा नहीं रहने देगी।

महात्मा गांधी ने कहा था “भारत का हृदय गांवों में बसता है। गांवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान ही नगरवासियों के अन्नदाता और सृष्टि पालक हैं।”

भारत कृषि प्रधान देश है। भले ही गांव के युवा अपनी अमूल्य धरोहर खेती-किसानी को घर के बुजुर्गों के भरोसे छोड़कर, शहरों में मजदूरी कर जीवनव्यापन के लिए चले गए थे, परंतु आज वे यथार्थ के धरातल पर पुनः आ गए हैं। गांधीजी ने स्वदेशी अपनाने के लिए आंदोलन चलाया था, जब अंग्रेजों ने हमारे देश में कब्जा कर रखा था। आज हमें अपने ही देश में पुनः एक बार फिर स्वदेशी अर्थात् अपने ही गांव-क्षेत्र के महत्व को स्वीकारना होगा, क्योंकि देश और जनता जिस त्रासदी को झेल रही उससे निपटने का एक मात्र उपाय यही है।

महात्मा गांधी ने स्वदेशी को व्रत के रूप में अपनाया था। व्रत का अर्थ ही होता है अटल निश्चय या दृढ़ संकल्प। गांधीजी देश की अर्थ व्यवस्था में हो रहे बदलाव को अच्छी तरह जानते थे। इसलिए राष्ट्र और गांव को उन्नत बनाने के लिए इस बात पर जोर दिया की जो

जहां निवास करता है, वहीं उपलब्ध वस्तुओं, स्थायान और वहीं निर्मित वस्तुओं का उपयोग करे।

उन्होंने अपने देश के पारंपरिक शिल्प व उद्योग को बढ़ावा देने पर बल दिया। देशी-विदेशी कंपनी और फैक्ट्रियों के वर्चस्व से गांव के बुनकर, लोहार, बढ़ई, चर्मकार, ठठेरा, कुंभार सभी के उद्योग नष्ट होते चले गए, लोग शहरों की ओर पलायन करने लगे।

वर्तमान में जब देश के अर्थ व्यवस्था डगमगा गई है तो पुनः गांवों के पारंपरिक लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना होगा। गांव के युवा जो शहरों से उत्तम शिक्षा प्राप्त कर आए हैं, वे रोजगार की तलाश में शहर में भटक रहे हैं। ये युवा नई तकनीक का उपयोग करने में पूर्ण सक्षम हैं, आवश्यकता है, सरकार द्वारा सहयोग और प्रोत्साहन की। गांव को उनके मूल रूप में ही संवारा जाए, सारी सुविधाएं प्रदान की जाएं।

इसलिए सरकार को गांव केंद्रित नीतियां बनाकर उन पर कड़ाई से पालन करना होगा। संकट की घड़ी में बहुत सी कंपनी “वर्क फ्रॉम होम” कर रही हैं। कोरोना से निपटने के बाद देश की कार्यशैली में बहुत बड़ा परिवर्तन आना तय है। तो गांव एवं क्षेत्र विशेष में उपलब्ध वस्तुओं पर आधारित उद्योगों को स्थापित किया जाना चाहिए।

देश की उन्नति खेती से जुड़ी है इसलिए कृषि के विकास के लिए नई तकनीकी, नए उपकरणों से किसानों को अवगत कराया जाए। उन्नत कृषि के लिए युवाओं में जागरूकता के साथ गाँव में ही नवीन टेक्नालॉजी द्वारा उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जाना आवश्यक है। पुरानी परंपरा को नए रूप में विकसित कर आस-पास उपलब्ध वस्तुओं को क्रय विक्रय करते हुए देश के हर क्षेत्र में ट्रांसपोर्ट द्वारा आयत, निर्यात आसानी से किया जा सकता है। घर से ही मोबाइल, इंटरनेट, कंप्यूटर से सभी कार्य किया जा सकता है।

देश आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा है और कोरोना वायरस से लड़ाई भी लड़ रहा है। किसी प्रकार की लड़ाई में धन का होना अति आवश्यक है और किसी भी संकट का सामना करने के लिए दृढ़ निश्चय का। अब तक हमने घरों में बन्द होकर इस वायरस से जंग लड़ी। इतने दिनों शासन ने, देश की जनता ने इस वास्तविकता को स्वीकार कर लिया कि अब खुले रहकर आत्मनियंत्रण, आत्म सुरक्षित रहते हुए जिम्मेदारी के साथ लड़ते हुए पुनः देश को आर्थिक संकट से बचाना होगा।



प्रायः देखा गया है कि किसी शहर में स्थापित कारखानों में वहां के लोग काम न करके दूसरे जगह काम की तलाश में चले जाते हैं, बेहतर होगा क्षेत्र विशेष के युवाओं को ही प्रशिक्षित कर उन्हें रोजगार प्रदान किया जाए। आनेवाले समय में वही व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा जिसके पास एकाध एकड़ खेत होगा।

तो क्यों ना हम इस कोरोना वायरस से एक सीख लें और गांधीजी के स्वदेशी अपनाने की नीति का पालन करते हुए अपने गांवों को ही सर्व सुविधा युक्त करते हुए रोजगारोन्मुख बनाएं। हमारे पास युवा शक्ति है जिसे बस अवसर मिलना चाहिए।

प्रभु के दिए सुख इतने हैं विकीर्ण धरती पर।  
भोग सके जो इन्हें, जगत में कहां अभी इतने नरा।  
और मनुज की नयी-नयी प्रेरक ये जिज्ञासाएं।  
उसकी वे सुबलिष्ठ सिंधु-मंथन में दक्ष भुजाएं।

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

- हिन्दी व्याख्याता,  
अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

## जीवन: गीता हर युग की कहानी

- नीरा भसीन

**गीता** अपनेआप में एक बहुत बड़ा ग्रन्थ माना जाता है, ये एक महान रचना है ऐसा हम सभी मानते भी हैं। इसका एक एक श्लोक हर युग में होनेवाले सामाजिक स्वरूप का, उसमें होनेवाले हर परिवर्तन का और परिवर्तनों से होने वाले प्रभावों का एक प्रामाणिक श्लोक संग्रह है।

इसे एक ओर तो वेद पुराणों का सार कहा जाता है तो दूसरी ओर समाज का प्रतिबिम्ब। समझने समझाने के लिए इस बात का अर्थ एक ही है। आदिकाल से समाज की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए वेद, पुराण, शास्त्र, रामायण और महाभारत आदि ग्रंथों की रचना हुई है और भागवत पुराण तो मानव जीवन के लिए पथप्रदर्शक का काम करता है, साधना और लगन के साथ किया अध्ययन मोक्ष की राह भी दिखाता है। प्राचीन काल में भी और आधुनिक काल में भी कई महान लोगों ने इसे सर्वोच्च ग्रन्थ माना है। राष्ट्र निर्माण के लिए, सामाजिक व्यवस्था को सुधरने के लिए और चरित्र निर्माण के लिए “गीता” के उपदेश गागर में सागर की तरह हैं।

मैंने कई महान संतों द्वारा “गीता” पर लिखे गए उनके विचारों का अध्ययन किया है, बहुत कुछ जाना है, बहुत कुछ समझा है। इसलिए कह सकती हूँ कि “गीता” को समझने के बाद ज्ञान और विवेक द्वारा हम अपना जीवन सफल और सरल बना सकते हैं। इतिहास साक्षी है, अनेकों सभ्यताएं आई और गई पर “गीता” में दिए गए उपदेश हर युग में मार्गदर्शक ही सिद्ध हुए हैं। अपने इस लेख द्वारा मैं अपने अध्ययन और विचारों को आप सबके साथ साझा करने का प्रयत्न करने जा रही हूँ। आप मेरे साथ-साथ अपने विचारों को भी अवश्य रखें, मेरे विचार से यह चरित्र निर्माण की ओर एक साझा प्रयत्न होगा।

मेरे विचार “गीता” में कहे गए श्लोकों के आधार पर ही हैं पर आज भी परिवार, समाज और देश की दशा पर यदि हम दृष्टि डालें तो लगता है कि हर पल इतिहास दोहराया जा रहा है। मैंने इस प्रयास में श्लोकों के शाब्दिक अर्थ के स्थान पर उद्देश को कहा जाता है कि मनुष्य योनि तभी मिलती है जब किसी ने अपने पूर्व जन्म में बहुत अच्छे कर्म किये हों। लेकिन एक बार यदि मनुष्य जन्म आपको मिल गया तो फिर आप में एक अद्भुत शक्ति एवं विशेषता आ जाती है, अब आप में प्राकृतिक कुछ भी नहीं है। प्रकृति आपके बड़े होने तक आपके शारीरिक विकास का ध्यान रखती है, फिर भी भावनात्मक विकास आपके अपने हाथ में है। मनुष्य को सब कुछ अपने पुरुषार्थ से ही प्राप्त करना होता है। उपलब्धियां भौतिक हों या आध्यात्मिक उसके लिए प्रयत्न हमें स्वयं करना पड़ता है। किस-किस काम से हमें खुशी मिलती है, यह एक बहुत ही निजी क्रिया है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हम किसी न किसी धर्म का पालन करते ही हैं, “धर्म” जिसका अर्थ और काम से कोई संबंध नहीं फिर भी हम देशकाल और समाज के आधार पर उसे अपनाते हैं क्योंकि इसके अंतर्गत हम कई प्रकार की खुशी और यश प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम एक ओर देश विदेश घूम के खुशी प्राप्त करते हैं तो दूसरी ओर मित्रता में या फिर मिल-बांट कर खाने में या फिर हो सकता है किसी को दूसरों की सहायता करके भी वैसी ही खुशी मिलती हो। अधिकतर लोग अध्यात्म या स्वाध्याय की राह को बहुत जटिल और नीरस मानते हैं, पर ऐसा नहीं है। हम इस राह पर चल कर भी उतने ही प्रसन्न रह सकते हैं जितना किसी भौतिक उपलब्धि में। जहाँ तक ज्ञान का प्रश्न है, हम जितना अधिक ज्ञान

प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे हमारा जीवन उतना ही प्रकाश से भर उठेगा। इसके लिए स्वाध्याय बहुत आवश्यक है क्योंकि हमें वही ज्ञान मिलेगा जिसे हमने देखा या जाना। ज्ञान से भौतिक सुखों की प्राप्ति तो होती ही है साथ ही साथ हमारे विवेक को भी बल मिलता है, धर्म को समझने और उसका सही रूप से पालन करने की भी राह मिल जाती है। मनुष्य अपने जीवन में काम, अर्थ और धर्म को मान कर चलते हैं। पूरा जीवन इसी में बिता देते हैं, काम एक प्राकृतिक व्यवहार है, अर्थ पुरुषार्थ के कर्मों की उपलब्धि है लेकिन धर्म हमें सही मार्ग दिखाता है ताकि सामाजिक व्यवस्था

सुख-शांति से चलती रहे और धर्म देशकाल व भौगोलिक आधार पर बनाया एवं लागू किया जाता है जबकि काम और कर्म नहीं। “गीता” धर्म और कर्म की राह सहज बनाती है। “गीता” एक माँ की तरह है जो अपनी संतान की मानसिक पीड़ा हर लेती है। कष्टों से त्रस्त मन यदि “माँ गीता” की शरण में जा बैठता है तो निःसंदेह उसे अपने कष्टों का निवारण करने की राह मिल जाती है, मनुष्य से मनुष्य की पहचान हो जाती है।

- ब्लाक नं. 26, फ्लैट-401, मलेशियन टाउनशिप,  
के.पी.एच.बी. कॉलोनी फेस-14, हैदराबाद - तेलंगाना

## सीमा पर चीन के व्यवहार के पीछे की पृष्ठभूमि

- डा. कुलदीप चन्द अभिनवोत्री

**भारत** की उत्तरी सीमा पर एक बार फिर विवाद शुरू हो गया है। सप्त सिन्धु क्षेत्र में लद्दाख से लेकर पूर्वोत्तर भारत में अरुणाचल प्रदेश तक 3488 किलोमीटर तक फैली भारत-तिब्बत सीमा है। जब तक तिब्बत स्वतंत्र देश था तब तक इस सीमा पर कोई विवाद नहीं था। लेकिन 1959 में चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया और शान्तिपूर्ण भारत-तिब्बत सीमा भारत-चीन सीमा में बदल गई। यदि उस समय भारत सरकार सक्रिय रहती तो शायद यह दुर्घटना न घटती। लेकिन उस समय नेहरू और उनके सबसे बड़े विश्वासी कृष्णामेनन चीन को प्रसन्न करने के लिए तिब्बत की बलि देने में सक्रिय थे। इसमें पुरोहित की भूमिका भारत के बीजिंग स्थित राजदूत पणिकर निभा रहे थे। शायद इन तीनों को लगता था कि तिब्बत की बलि से चीन प्रसन्न हो जाएगा। अलबत्ता गृहमंत्री सरदार पटेल ने जरूर 1949-1950 में ही नेहरू को एक पत्र लिखकर तिब्बत के प्रति चीन के इरादों से आगाह किया था और यह भी कहा था कि चीन केवल तिब्बत की बलि से प्रसन्न नहीं होगा। लेकिन नेहरू पटेल की सलाह को कितना महत्व देते थे यह कहने की जरूरत नहीं है। चीन ने तो 1950 में ही नेहरू और कृष्णामेनन की सदाशयता का लाभ उठाते हुए लद्दाख में अवसाईचिन क्षेत्र के 38 हजार वर्ग किलोमीटर पर कब्जा ही नहीं कर लिया बल्कि उस क्षेत्र में से सिकियांग को तिब्बत से जोड़ने वाली दो सौ किलोमीटर सड़क भी बना ली थी। इस सड़क से चीन की सामरिक क्षमता बढ़ी। दुर्भाग्य से उस समय नेहरू सरकार ने अवसाईचिन को मुक्त करवाने की रणनीति बनाने की बजाए चीन के इस पूरे प्रकरण को भारतीयों से छिपाने में ज्यादा कौशल दिखाया। नेहरू के दुर्भाग्य से 1958 में चीन ने अपने नवशे में अवसाई चिन को चीन का हिस्सा दिखा कर स्वयं ही सारा भांडाफोड़ कर दिया था। तब नेहरू को लोकसभा का सामना करना मुश्किल हो गया था। कांग्रेस के भीतर भी बवाल मच गया था लेकिन नेहरू किसी तरह महावीर त्यागी का सामना करते हुए भी बच निकले थे। परन्तु इसे क्या कहा जाए कि यह गच्छा खा

जाने के बाद भी नेहरू संभले नहीं बल्कि हिन्दी चीनी भाई भाई का नारा ज्यादा जोर से लगाने लगे थे।

1962 में चीन ने स्वयं ही भारत पर हमला कर, इस नारे को बन्द करवाया। इस हमले में चीन ने भारत की और भूमि पर कब्जा कर लिया और स्वयं ही सीजफायर कर दिया। चीन की इस हरकत से नेहरू का जो होना था वह हुआ लेकिन चीन ने भी कुछ सबक सीख लिए। चीन को लगा कि भविष्य में हिमालय पर यदि भारत के साथ लड़ाई लम्बी खिंचती है तो सीमा पर लड़ रही चीनी सेनाओं के लिए तिब्बत के रास्ते सप्लाई चैन बनाए रखना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए उसने उसी दिन से भारत-तिब्बत सीमांत पर सैनिक लिहाज से सड़कों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं उसने गोर्मों से लेकर लद्दाखा तक रेलवे लाईन भी बिछा दी। भारत ने 1962 से क्या सीखा, इस पर बहस हो सकती है लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि उसके बाद भी भारत चीन गणतंत्र (ताइवान) के स्थान पर माओ के चीन को सुरक्षा परिषद का सदस्य बनाए जाने पर जोर देता रहा। नेहरू तब भी शायद यह सोचते हों कि चीन भारत के इन प्रयासों से प्रसन्न होकर मित्रता का हाथ बढ़ा दे। उस काल में भी सीमांत को मजबूत करने में भारत की सक्रियता कम ही दिखाई दी। चीन ने इसको भलीभाँति पहचान लिया था।

अलबत्ता यहाँ तक भारतीय सेना का सवाल है, उसने 62 के पाँच साल बाद सितम्बर 1967 में सिक्किम के नाथुला में चीन की सेना को ठीकठाक जबाब दे दिया था। चीनी सेना ने इस इलाके में हमला कर आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन भारतीय सेना ने उसका मुँह तोड़ जबाब ही नहीं दिया बल्कि भविष्य का सबक भी पढ़ा दिया था। लेकिन असली जबाब तो भारत सरकार को ही देना था। दुर्भाग्य से वह जबाब कभी नहीं दिया गया। 1962 में भारत की सेना, चीन से खाली हाथों से लड़ रही थी और उसके बाद बंधे हाथों से लड़ने लगी। 1967 में तो किसी उत्साही सैनिक अधिकारी ने

मौके की नजाकत को देखकर स्वयं ही अपने हाथ खोल लिए थे। लेकिन चीन जानता था कि सीमा पर तैनात सैनिकों के हाथ बाँध कर रखना भारत सरकार का नीतिगत फैसला था, इसलिए हर बार उसका उल्लंघन संभव नहीं है। इस सबसे चीन का हौसला बढ़ना लाजिमी ही था। यही कारण है कि चीन सरकार उत्तरी सीमांत के अतिक्रमण का प्रयोग 1962 के बाद से निरन्तर करती आ रही है। वह भारतीय सीमा का गाढ़े बगाड़े अतिक्रमण करती है। बातचीत के बाद पीछे भी चली जाती है। लेकिन इस प्रयोग से वह भारत सरकार की इच्छा शक्ति और भारतीय सेना का स्ट्रेमिना परखती है। सेना ने तो अपना स्ट्रेमिना नाथुला में दिखा दिया था और चीन को वह समझ भी आ गया था। लेकिन चीन को तो दिल्ली का रवैया परखना होता है। चीन का मानना था कि भारत सरकार का यह रवैया ढुलमुल ही रहता है। इसी को ध्यान में रख कर चीन भारत के प्रति अपनी भविष्य की रणनीति तय करता है।

लेकिन पिछले कुछ साल से चीन के इस प्रयोग से वह परिणाम नहीं आ रहे जो आज तक आते रहे हैं। 2017 में सिक्किम का डोकलाम तो इसका एक उदाहरण है। चीन लम्बे अरसे से चुम्बी घाटी पर आँख लगाए बैठा है। तीन साल पहले उसने डोकलाम से यह प्रयास किया। 70 दिन से भी ज्यादा आमने सामने रहने के बावजूद भारतीय सेना अपने स्टैंड पर कायम रही। लेकिन चीन का संकट केवल डोकलाम नहीं है। उसकी चिन्ता का कारण दूसरा है। भारत ने भी चीन की तरह भारत-तिब्बत सीमा पर सैनिक ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए सड़कें बनाने का काम तेज कर दिया है। दौलतबेग ओल्डी को जोड़ने वाली सड़क बन गई है। गावलान घाटी में निर्माण हो रहा है। पंजाब में भुनपली से हिमाचल के बिलासपुर से होते हुए, लेह तक रेलवे लाईन बनाने का मामला भी फायलों से बाहर आने लगा है। भारत-तिब्बत-नेपाल के जंक्शन के नाम से जाने वाले लिपुलेख तक सड़क बन गई है। दूसरे स्थानों पर भी सड़क निर्माण का काम तेज हो गया है। चीन वही पुराना प्रयोग फिर कर रहा है। सीमा पर सैनिक जमावड़ा फिर वार्ता के माध्यम से “फिलहाल” सड़क निर्माण के कार्य को रोक दिया जाता है, जैसे निर्णय की प्रतीक्षा। लेकिन चीन के दुर्भाग्य से भारत सरकार ने स्पष्ट कर दिया है वार्ता तो चलती रहेगी लेकिन सड़कें भी बनती रहेंगी। यह चीन को चीन की भाषा में जबाब है।

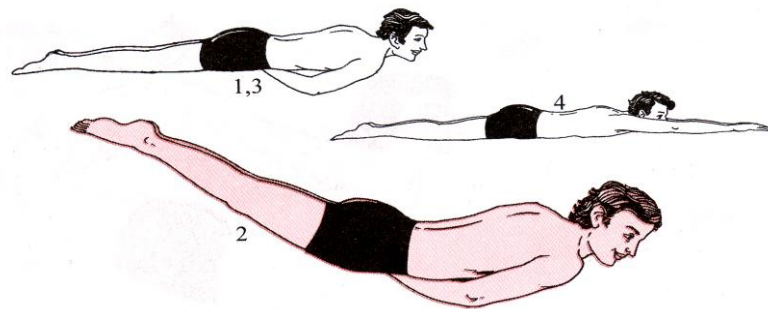
चीन का एक संकट और भी है। उसे अपने व्यापार के लिए सागर चाहिए। साउथ चीन सागर पर उसके दावे को कोई स्वीकार नहीं कर रहा। भारत डट कर वियतनाम के साथ खड़ा है। अमेरिका भी सार्थक चीन सागर को केवल चीन के हवाले कैसे कर सकता है? उसे समुद्र के लिए रास्ता चाहिए और वह गिलगित, बलूचिस्तान से होता हुआ ग्वादर तक पहुँचता है। इसलिए चीन ने चीन-

पाकिस्तान आर्थिक गलियारा के नाम पर बहुत सा पैसा गिलगित और ग्वादर में झोंक रखा है। इस गलियारे की सड़क गिलगित में से होकर जाती है। गिलगित जम्मू कश्मीर का हिस्सा है, जिस पर नेहरू की अदृष्टि और माऊंटबेटन दम्पति की कृपा दृष्टि से पाकिस्तान ने कब्जा कर रखा है। जम्मू कश्मीर भारत का उसी प्रकार हिस्सा है जिस प्रकार हरियाणा और बिहार, इसको लेकर भारतीयों को तो कोई शक नहीं। लेकिन नेहरू ने बहुत परिश्रम करके भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 डाल रखा था, जिसके कारण विदेशों में जम्मू कश्मीर की सांविधानिक स्थिति के बारे में भ्रम बना रहता था। कभी पंडित नेहरू यह मामला सुरक्षा परिषद में ले गए थे, इससे भारत के दुश्मनों को यह भ्रम फैलाने का एक आधार मिला हुआ था। नरेन्द्र मोदी सरकार ने अनुच्छेद 370 के सारे जहर को भारतीय संविधान से निकाल दिया है जिसके कारण दूसरे देशों का भी भ्रम धीरे धीरे दूर होने लगा है। यही कारण है अनुच्छेद 370 को हटाए जाने का सबसे ज्यादा कष्ट पाकिस्तान और चीन को ही हुआ। अनुच्छेद 370 समाप्त ही नहीं हुआ बल्कि जम्मू कश्मीर को भाषा के आधार पर पुनर्गठित कर, लद्दाख, गिलगित और वलतीस्तान को लद्दाख के नाम से अलग केन्द्र शासित राज्य बना दिया गया है और जम्मू कश्मीर, गुज्जफराबाद, मीरपुर इत्यादि को जम्मू कश्मीर के नाम से अलग केन्द्र शासित राज्य बना दिया गया। भारत की राजनीति में गिलगित वलतीस्तान एक बार फिर केन्द्रबिन्दु में आ गया है। चीन की चिन्ता का सबसे बड़ा कारण यही है, क्योंकि उसकी भावी आर्थिक नीति इसी गिलगित में से होकर गुजरती है।

इधर कोरोना ने उसकी खाट खड़ी कर दी है। प्रश्न यह नहीं है कि उसने इस बीमारी पर काबू पा लिया या नहीं। इस प्रश्न पर तो बहस चलती ही रहेगी। लेकिन इसका उत्तर मिलने से पहले ही अनेक विदेशी कम्पनियाँ चीन से अपना बोरियाँ विस्तार समेट रही हैं। ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि अधिकांश कम्पनियाँ भारत में आने की इच्छुक हैं। योगी अदित्यानाथ इसकी तैयारी में भी लगे हैं। चीन यह कैसे सहन कर सकता है? वह सीमा पर जमावड़ा और झड़पों से दुनिया को यह संकेत देना चाहता है कि भारत भी निवेश के लक्ष्य सुरक्षित नहीं है।

भारत-तिब्बत सीमा पर चीन द्वारा तनाव बढ़ाने का कारण मुख्य रूप से यही है। लेकिन चीन इस बार गत्वा खा गया लगता है। दिल्ली में इस बार जो सरकार है वह भारत भूमि के एक एक ईंच को भारत माता मानती है न कि जमीन का वह बंजर टुकड़ा जहाँ घास का तिनका तक नहीं उगता। और जहाँ तक विदेशी कम्पनियों द्वारा निवेश किए जाने का सवाल है, उसकी आहत को सीमा की झड़प शायद ही रोक पाए क्योंकि सभी जानते हैं चारों ओर से घिरा चीन इस समय लड़ने की स्थिति में नहीं है।

## योगासनः शलभासन



### शलभ टिड्डे को कहते हैं इस आसन की मुख्य मुद्रा में शरीर किसी टिड्डे की तरह प्रतीत होता है।

**स्थिति:** पेट के बल लेट जायें और दोनों हाथों को सिर के ऊपर तान कर सीधा फैला दें ताकि कुहनियाँ सीधी रहें। दोनों हथेलियाँ एवं टुड्डी धरती को स्पर्श करती हैं। दोनों पैर आपस में मिले हुए सीधे तने होते हैं तथा दोनों तलवे ऊपर की ओर होते हैं। हाथों की उँगलियों से लेकर पैर के अँगूठे तक सारा शरीर एक सीध में रहता है।

**एकम्:** दोनों हथेलियों को आदि मुद्रा में बाँध कर मुड़ी बना लें, अर्थात् दोनों अँगूठों को उस हथेली की बाकी चार उँगलियों से भींच लें। अब दोनों मुट्टियों को पेट के नीचे परस्पर जाँघों की जड़ों पर व्यवस्थित कर लें।

**टि:** श्वास लेते हुए दोनों टांगों को एक साथ उठाएँ ताकि पंजे पूरी तरह से हवा में हों। सिर एवं कमर से ऊपर के धड़ को धरती से एकदम न उठने दें। यह इस आसन की मुख्य मुद्रा है।

**श्रीणि:** 'एकम्' अवस्था में वापस लौटें।

**चत्वारि:** वापस स्थिति में आयें।

#### लाभ:

**सामान्य:** भुजंगासन का पूरक आसन होने के कारण उसके समस्त लाभों को निखारता है। यह आसन नितम्बों, कटि प्रदेश, गुहा प्रदेश, आमाशय, जंघाओं गुदों और पैरों की मालिश करता है, साथ ही अग्नाशय को सक्रिय करता है।

**विशेष:** कोष्ठबद्धता, गैस, मधुमेह एवं कटि प्रदेश के विकारों में अत्यंत लाभकारी है।

**आध्यात्मिक:** इस आसन के अभ्यास से शरीर हल्का-फुल्का एवं तत्पर हो जाता है तथा इन्द्रियों को वश में करने में सहायता मिलती है।

**सावधानी:** जो व्यक्ति मूत्र के रोगों से, हार्निया एवं उत्त रक्तचाप से पीड़ित हों वे इस आसन को न करें।

#### महत्वपूर्ण बिन्दु:

**झुकने के क्रम में:** इस आसन की मुख्य मुद्रा में दोनों घुटने मुड़ने नहीं चाहिये। दोनों पैर एकदम सीधे होने चाहिए।

**श्वास लेने के क्रम में:** पैरों को उठाने के समय श्वास लें तथा पैरों को धरती पर रखने के समय श्वास छोड़ें। आसन की मुख्य मुद्रा में श्वसन-गति सामान्य होती है।



Make a statement  
about yourself  
without even saying  
a word



Reflect your taste with the very latest in interior artistry. The leader in the plywood category Centuryply adds many inspiring touches with the widest range of spectacular veneers and eye-catching laminates. What you get is a high end designer space that talks eloquent about your lifestyle and leaves all and sundry speechless with admiration.

  
**CENTURYPLY**

Plywood Veneer Laminate Prelam MDF